



I ISSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १३४ म अंक १५ जुलाई २०१३ (वर्ष ६ मस ६७ अंक १३४)



ई अंकमे अछि:-


बिन्दुशिव ठाकुर-बिहनि कथा - पश्चात्ताप - उपकारके चुपकार- प्रतिशोध - जेहन कबणी तेहन भवणी

उपन्यास- **भादौक आठ अन्हार** -क किछ अशिजगदीश प्रसाद मण्डल

बाम रिवस साह-बिहनि कथा-शिक्षाक महत्

सूर्यरव- (एकांकी नाटक)-जगदीश प्रसाद मण्डल

बिदेह नूतन अंक भाषापक बचानेखन-

 बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट

 VI DEHA MAI THILI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

बिदेह अ-पत्रिकाक सब्झा प्रबान अंक (ब्रैल, तिरहुता आ देरनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपव उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari



versions) are available for pdf download at the following link.

बिदेह ग्रंथिकाक सब्ज्ठा पुरान अंक ब्रैल, तिरहुता आ देरनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ग्रंथिकाक पहिल ३.० अंक

बिदेह ग्रंथिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक



बिदेह आब.एस.एस.फीड एनीमेटरकेँ अपन साँठ/ ब्रैगपब लगाउ ।



ब्रैग "लेखाउठ" पब "एड गाडजेट" मे "फीड" सेलेक्ट कए "फीड यू.आब.एन." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठाँगप केनासँ सेहो बिदेह फीड प्राप्त कए सकैत छी । गुगल रीडरमे पठरा लेल <http://reader.google.com> पब जा कए Add a Subscription बँटन क्लिक कक आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पेसठ कक आ Add बँटन दराँड ।



Join official Videha facebook group.



Join Videha googl egroups



बिदेह रेडियो:मैथिली कथा-करिता आदिक पहिल पोडकास्ट साँठ

<http://videha123radio.wordpress.com/>



मैथिली देरनागरी रा मिथिलाक्षरबमे नहि देखि/ निथि पारि बहर छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari / Mithi lakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाड । संगहि रिदेहक सुँभ मैथिली भाषापक/ बचना लेखनक नर-प्रवान अंक पढ़ू ।

<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीकामे ऑनलाइन देरनागरी षाँगप कक, रीकामे कापी कक आ रड डाक्यूमेन्टमे पेसुँ कए रड हाँगनकेँ सेर कक । रिशेष जानकारीक लेन ggajendra@videha.com पब संपर्क कक ।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at <http://www.videha.co.in/> .)

Go to the link below for download of old issues of VI DEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. रिदेहक प्रवान अंक आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक हाँगन सभ (उचावण, रड सुख साव आ दूरसुँभत मंत्र सहित) डाउनलोड कवरौक हेतु नीचाँक लिंक पब जाड ।

VI DEHA ARCHIVE रिदेह आर्काइव



जातिबन्धुन पुरी महकरी रिद्यापति । भावत आ नेपानक माँष्टमे पसवन मिथिलाक धवती प्राचीन कारहिसेँ महान प्रकष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहर अछि । मिथिलाक महान प्रकष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखू ।





गौरी-शकवक पातरशि कानक मुर्ति, एहिमे मिथिनाम्बवमे (१२०० र्ष पुर्रक) खभिनेथ
खंकित खड्दि । मिथिनाक भावत आ नेपातक माष्टमे पसवत एहि तवहक खन्याय प्राचीन
आ नर स्थाप, चिद, खभिनेथ आ मुर्तिकनाक हेतु देखु मिथिनाक खोज

मिथिना, मैथिन आ मैथिनीसँ सङ्गित सूचना, संपर्क, खल्लषण सर्गहि रिदेहक सर्च-गंजन
आ नुज सर्गिस आ मिथिना, मैथिन आ मैथिनीसँ सङ्गित रेसंगसँ सभक संग्र
संकनक नेत देखु रिदेह सूचना सर्क खल्लषण

रिदेह जानरुतक डिस्कसन फोवमपव जाड ।

“मैथिन आर मिथिना” (मैथिनीक सभसँ लोकप्रिय जानरुत) पव जाड ।

रिन्दश्रव ठाकुर

रिहनि कथा - पश्चताप - उपकावके चुपकाव- प्रतिशोध - जेहन कवणी तेहन
भवणी

पश्चताप

- जुगत भाग रे एना किय हूँ रिमकोने छे ? रूमागछो जेना चेहवापव १२
राजि गेलो ।
- हो जेया कि कहियो हमर सर मेहेनेतपव पानि फेष्टागेलो । अपन पेष्ट
काष्टिदा काष्टि रेष्टाके पटोनीयो । जते जते तौरा मन्दके सर देनीये । हू-
आगS.L.C के पविणाम देखि मन रिम्भितु भ गेल ।
- से किय रौ पास ने कयनको छोडा से ?
- हो कि पास कवते । १ गोष्टे रिषयमे नगानेनके । पठ कहत छनिसे त
मनुसगोह नगेत छने । स्फुर जएरक राना रनाक घबक कोना काज ने करैत छन
। हूदा पठ कि जेते ओ त स्फुर समयधरि अपन साथिसङ्गीसंगमे बढबसीया मनरैत -
छनेक । आर ओकरे साथ साथ पठरना छोडासभके अपन सफलतापव नटेत देखैत
छेक ओकर करेज कष्टेछे । एखन बोरेस पनरपव ओहबिया दने छे । रफाडि
छेडिबहन छे सरैरेस । मोहनक रेष्टिसंग हूठठके हूठठा कपेया न क जे सिनेमा
देख जागत छनेक सेहो घटना ओकरा काष्ट छे छे आ अपन कवणीपव रेव रेव
पश्चताप करैत छेक । हूदा आर पश्चतेने होएत कि ? समय त गजेव गेल
खडि । आ रिंतेन समय कहु घुबिक हेल एनेय ?

उपकावके चुपकाव



हम जयनगवस अरैत छलौ । बस्तुमे देखलौ एकठा महीना अपन ७ महिनाक रँचाके गोदीमे न क कनेत छन । नगमे जा जखन देखलीये त ओ हमरे पडोसी मनोजके भग्या बँक । माने हमब गामक भोजी । घब एकेठाम हेअरक कावण हमसरँ एकदोसबके रँड निकजका जनेत छलौ । हमबा देखि ओ खाओब जोड जोडस हिचैक हिचैक कानख नगरीह । कि भेन भोजी छोट रँचाक नेने एना किय भागन जागत छी ? प्रश्नके उतबमे ओ रँजरीह हमबा एहि दुनियाँमे कियो ने अछि " - । जत ततस हम ठोकरे खागत छी ते हम मबि जख चाँत छी । हमबा छोट दिख । । जत मन होएत तत तेन जाएँ । ने त जहब माहूब खा मबि जखँ " ।

एहन पिडाएन रात सुनि हम नमस पुछनीये भोजी एना किय रँजेत छी - ? घबमे हेब नगडा भेन से ? तरँ ओ अपन दूरँचा - ख भवन कहानी रँतारँ नगरीह: कानख नगरक चनेत खाना समयपब ने रँन सकन ताहिस हुकब सम्ब सासु आ पतिदेर सेहो पिठनकनि आ घबस भगादेनकनि । पितखीसमे ओहिना राजन हेतह ओसभ चरु अहा । घब छोटि ने जाड कते । कतेक समनोनाक राँद ओ आरँ नेन बाजी भेननि । जखन हम अपनारँगे मोठबसाँकनपब नारिँ ओकबा दुरापब उताबलौ त उनकब सम्ब,सासु आ हुकब पती हमबा उपब उलेँ नालेना नगोनक । तोरे कावण ग मोगीया अतेक रँहसन छै । तोरे सिखाएनपब एके ठाँपब नचेत छै । आदि आदि तखन हम महशुस कयलौ जे दोसबके गज्जत रँचाएँ आ अपना रँज्जत होएँ । दोसबके भनाग कबरँ अपन चबिह हवा कवाएँ । उपकाबके चुपकाब एकरे कहँत छैक ।

प्रतिशोध

नर बिराहित सुभासके आग सुहागवात छनि । खानपिन समस्तु भेनाक राँद हजारी सपना तथा प्रेमपूर्ण आशा रँकि प्रियसी गनुजाब क बहन घबदिस रँठन । एगोठ पँबेब असोवापब आ एगोठ आननेमे छलौ कि भितबस कया राजन कनिक हमब " - पँबेबक चप्पन नेने आँ,हम रँसब गेलौ । न राँत सुनि नरपनीक एहन सन्नकावही " सुभासके करेजपब ठंका खँनू ददा दाम्पल जीरनके पहिन दिन आ प्रियसीके प्रथम बाति सोचि जखन ओ चप्पन न क गेनाह त घोघ उठरँत सिना तानिक कया रँजरीह अहाके हम चप्पन नारँनेन अद्वैरक प्रयोजन रँननिये" - ? अहाक रँरँजी दहमाशी बकम न अहाके रँचनक अछि आ हमब रँरँजी एकएक धुब जमिन रँचि हमबा नेन - अहाके कननक अछि । एहि हिसारँ पँसास खबिदर दस भेनहू अहा जे आरंभकता पडनापब खबिदाब किछ कवासकेय । ग गप्प सुनि सुभासक गर्दन नाजस नुक्ति " ।



अ हम रँस - गेलैक आ ओ निकतव ल गेलाह । तखन कन्या हेल नम्र ल कहनि
एकठै अडिनय कयलौ । आजुक रौद एहन किछु नै अहाके महशुस कवएरौक हेतु
कवरँ । एखन नेन म्फमाप्रार्थी छी । "

कन्याक आथिमे अपन रौरुजस नेनगेन पैसाक ज्ञाना छत्र । ठकापव रिक्करँना एहन
दानरकपी पतिप्रतिके प्रतिशोधक भारना छत्र ।

जेहन कवणी तेहन भवणी

सामक समयमे रूँटिया अपन नलकी पुतौहके न क पोखरिमाखरि जागत छत्र ।
तखने ओम्बस वामगन्जरौनी अरैत छत्रिह । रिचे रौँठमे दुनूके भेँष्टघाँष्ट भेल आ
वामगन्जरौनी पुछलक रूँटियास -

ये काकी एकठै रौत हेल सुनरियेय केनादन साँच ?

- गे कि सुनरनीय से ?

- ए रूँटिया धनगठौरौनीदिया नै सुनरियेय से, कहादन दोसरो घवरँना छोटि देनके
?

- ह गे सुनरियय हमहु । दुव रँवकपियाके कोन रौत । रूँटावीमे घिठारी क व
गेलै त अहिना हेते नै ।

- ह ये काकी हे घबमे ककरो नै ग्वदाने छत्रि । अपने मनस जे जे मन
होगछत्रि से से करै छत्रि । घवरँना रिचवा पवदेशीया २ सान ३ सानमे एकरँव
अरै छत्रि आ हेल चैन जागत छत्रि । झुदा तौरा कपेया सरँ एकरे नामपव
पठरैत छत्रि । कोनो चूगजके दुखो तकिरप नै । से बन्डिया दुनू रँचाके छोटिक
सरँ तौरा न क ओग चमवरी मवदरँसगे कोना उटैव गेलै ? आ अरँ जखन तौरा
चुसन ल गेलैय त रात मारिक भगा देनकेय । निके भेलै हकर्मौके जेहने कवणी
तेहने भवणी । अरँ छिछ्यागत बहो जिनगीभवि ।

मौनागर गान्ठक फुन, जिनगीक जीत, उथोन-पतन, जीरँन-मवण, जीरँन-संघर्ष, नै
धाँडै, रिधरा-सधरा आ रँडकी रँहिन उपन्यासक पछाति जगदीशि प्रसाद मण्डनक
भादोक आँठ अन्हाव उपन्यासक किछु अशि...

उपन्यास



भादक आठ अन्हार

जगदीश प्रसाद मण्डल

आने दिन जकाँ स्वजाकाका जुला आडा पव बाथि पाँज भवि जनेव कष्टने बहथि आकि हला जकाँ दुबक खराज रूमि पडरनि । घास काँठरँ छोडा आडा पव आरि ठाठ भ२ हियासए नगना । दुबक हला दूरेमे, तँए कोनो तेहेन साह नै घबघबाएने रूमि पडरनि । मन भेननि जे कनी ठहरि-रूमि हलाक भाँजो रूमि ती आ पानिओ पीरँ नैरँ । पानि मनमे खरिंते, मनमे कष्टौन उठरनि । एकठा मन कहनि “पानि पीरँ” दोसव कहनि “नै पीरँ ।” दूनुक तर्को खपन-खपन आ चाविओ खपन-खपन । एकक तर्क जे धवतीपव सभसँ शूफ पानि होएए । दोसवक तर्क जे पानि नै खल होएए । आनो-आनो गामक खलमे रोगक दोख नै छै जे पानिमे छै । एक्क गामक दोसव अनाव रा कक पानि पीने सबदी भ२ जाँग छै । दूदा तैयो दूनु सँगे शीम्व-प्रवानसँ न२ क२ चोक-चौवाहा धवि तँ ठहरिंते खडि । देखिनिहार तँ एक-दोसवाक प्रेमी कहरे कवत । ओना स्वजाकाका जखनि लोकका उखड हाक काज शुक करै छथि तँगसँ पहिने खल-जन कएए क२ शुक करै छथि ।

मनमे हलाक खनधुनी नगने बहनि आकि एक गोष्टे मोष्टव साङकिनसँ सडक धेने जागतो आ रँजितो जे कोसी रान्ह टूँट गेन । एक दिसनसँ गामक गाम डूमोने खरैए । रिना किछ दोहरौने स्वजाकाका घासक आँठी रान्हि घब दिस रँठना ।

दस गोष्टेक परिवार स्वजाकाका । पाँच रीघा खेतक रीचक गिवहसुती । ओना खेतक आँठ-पेँठ छोँठ बहनि दूदा खपनारै गिवहसुत मानैत । गिवहसुत तँ रएह ने जे खपन खेत-पथावसँ जीरन-यापनक नग घवि पहुँच सकए । पाँचे रीघाक बकरामे एकठा दस कष्टाक पोखविओ छन्हि जोत जमीनमे एक रीघा घासोक खेती करै छथि, जँगसँ खुँगापव गिवहसुती जिनगीक एकठा उद्याग नगोने छथि ।

खेतक आडा ठँपिते स्वजाकाकाक मनमे उठरनि, जँ कही पडिने रौटा जकाँ आएन तँ सभ घब खसि पडत । केते दिनसँ रिचारे छी जे कबसीओ भवि पक्का रना नैरँ जे कमसँ कम रौटा सँ घब रँचा नैरँ । से कहाँ भ२ परैए । ने सबकाबी आशा आ ने रँकक आशा । जँ घब खसि पडत तखनि की कवरँ ? खेतक घास डूमि जाएत । रँड सहास कवरँ तँ डूमनोमे हँथोडा-हँथोडा काँठरँ दूदा ओहो तँ तेसवा दिन सडए नगत । दूदा रौटा क समए तँ रौटा क समए भेन । भुसँएक कोन ठँकान, बहत कि भाँसत, नहियौँ भाँसत आ पाँच दिन पानिमे भिजत तँ सडा ए जाएत । घबक खलक तँ सएह गति हएत । एक तँ उपवसँ दिन-वाति रँवखा नधने खडि तैपव एहेन रिपति ओत । मनख तँ खनको घब आ सुनोक घबमे जा खपन-खपन जान रँचा नैरँ दूदा चाक गाएकेँ की कवरँ ? खुँगापव गए खट-पानि रँतेर



मवि जाधत । अपनो एते दिनक पछाति जोड़ा याएन रोजगावसँ तँ हाथ धुखए पड़त । गाएक रोजगाव कि पौखिक माछो तँ चलि जाधत, थेतक धानो कि रीचत ? तखनि पबिराव कि हएत ?

दस डेग आगु रीठि ते दोसबाक झुँहेँ स्वजाकाका सुननि जे कमलाक छहव दूँष्टि गेल । कमला छहव दूँष्टिँ सुनना पाँचो मिनट नै भेलनि आकि दोसबा गामसँ हल्ला उठल जे गाम डुमि गेल, हो अगिला गौआँ सब अपन गाए-मान रीचरह । जहिना भूखसँ पेटमे रँगहा नगौ छै तहिना स्वजाकाकेँ रूँधि-सँ-रिरेक धवि रँगहा नगए नगनि, जगसँ जहिना कनेत रीचाकेँ ग्दग्ददी नगा हँसौन जाए तहिना काकाक मन ग्दग्ददेनि । दवरँज्जापव अरिंते पहिने चाक गाएकेँ देखि पानि पीननि । उमसगव समए देखि नहरँक रिचाव केननि झुँदा नगले मेघ नँपा हरा उठि गेली । किछ रिशीमक समए भेटनि । तमारुन चूना खेनि । थाएते मनमे उठनि जूग-जूगक खेलौना कोसी-कमला भ२ गेल अछि । राँह दूँष्टिापव आकि छहव दूँष्टिापव गामक गाम उजड़ा जाए । लोक मरे छै, मान-जान मरे छै, तग सँग फन-फुनराड़ी, गाडी-कनम नाशि होए छै । झुँदा एक दिस रीठि अरिंते रिनाशि शुक होएत तँ दोसब दिस बग-रिबगक महजान हेलकँ शुक होए छै । गामे-गामे बग-बगक थिम्सा-पिहानीक माध्यासँ बग-बगक रिचाव उड़ए नगौ छै । केमहरो उड़ छै जे सात रँहिन कोसी सँगे मिन सद्दध धविक यात्रा कवती तँ केमहरो उड़ छै कोसी-कमलाक मिनानी हएत । मिथिलाचनक आध्यामिक दर्शन केना दरौन गेल अछि । मिथिला आध्यामे दर्शनक भूमि बहन अछि, जे दर्शन जिनगीक रासुरीक मुन्यकेँ मुन्यकिन केने अछि ।

जहिना अंधरिप्लासक रीच समाज रिखडित अछि तहिना शीसन पछाति रिखडित अछि । बग-रिबगक जान पसवत अछि । मिथिलाचनक पुरी छोवसँ पछिमी छोव धवि कवीरँ पचासोसँ डुपव रँहए । जे उतवसँ नेपान होएत अरँहए । खानी मधुरनी जिलाक सीमानमे रीस-पचासठि धाव रँहए । चीन-भावतक रीच नमगव-चौड़गव पहाड़ी गलाका अछि । नमहव-डुँचगव बहने रँवहो रँने छै जे पिघलि-पिघलि पानि रँनि रँहरो करँह । तँ किछ धाव रँवहमसिखा आ किछ रँवसाती अछि । तग सँग सद्दध जकाँ गाम-गामक चोव (नीचवस जमीन) सब अछि । जगमे नीठ-समाठ भवत छै आ सानो भवि पवता पड़त वँह छै । धारोक अपन-अपन गुण होए छै । किछ धाव असथिवसँ एक्क जगहपव सएओ रँखसँ रँहत आएत अछि आ अथनो अछि । झुँदा किछ धाव कठनमा सेहो होए । मिथिलाचनक कोसी-कमला तही श्रेणीक छी । मिथिलाचनक पुरी सीमासँ न२ क२ मधुरनी जिलाक पुरी छोव धवि पकड़ा धवतीकेँ तेना क२ कोसी तौड़नक जे उपजाड माष्टि या तँ भाँसि क२ सद्दधमे चलि गेल रा रँवसँ तोपा गेल । रँवक एते मोष्ट पड़त पड़ा गेल अछि जे उपजाड शीजी छी भ२ गेल छै । तहिना कमला मधुरनी जिलाक रीचो-रीच रोहि माष्टिक उपदर केने अछि । जहिना कोसी पुरसँ पछिम झुँहेँ तहिना कमला पछिमसँ पुर झुँहेँ आरि सौसे मिथिलाचनक माष्टिक उरँवा शीजी नष्ट क२ देने अछि ।



सुपौन, मधुरनी, दवर्तगाम् होगत दडिनमे गर्गाम् घेवाएन अछि । मिथिनाचनक धाव उतवस दडिन झुहै आ गर्गा महवानी पट्टीमस पूर झुहै । उकडू रनि अछि । जे गर्गा भोजपुवी स्केव ठपिते मिथिनाचनक दडिनी छेव रँगानक खाड़ ी पहुँचेए । मिथिनाचनक उपजाउ रडु एक-बगाह बहने रँगानदेशीक टाका तक नोकक आराजाही । किडु रैपारोस आ किडु गवीरक रोजगारोस । भोजपुव स्केवस न२ क२ गर्गाक उतवी स्केवक, मिथिनाचनक खानो-पान आ जिनगीक खानो-खानो काजमे एककपता आएन । ओना अहना केतो पानक खेती हएत तँ जहिना एकठाम पानक रीखा खसौन जागए, ओकवा उखाड़ा हाथस रौपन जगए आ काँठन जागए, अ सरनूष तँ रनिते बहन अछि आ रनिते बहत । एक तबहक जिनगी जनिहाबक रीच जिनगीमे एककपता अरै छै । प्राग जाति, द्वाव रंग, अवादि शिष्ट, किअए रनन ? खेव जे होउ ।

दवर्तगा-समसुतीपुवस पूर आ सहवसास पडिम रुशेसव स्थान अनाकामे अखनो उजाड़ा पडन छै । केना ने पडत ? जग अनाकामे किडु स्केव रौबहो मस आ किडु स्केव तीन मस-सँ-नख मस धि पानिमे डुमन बरुए ओग खेतमे माँठक उपजा केना हएत ? माँठ बहितो पानि रनन अछि । मनमे अरिते रिचाव रँठनि । जेठाम पानिक अ स्थिति बहत तेठाम माँठक रा पानिक उपयोग केना हएत ? ओहन खेती ने भ२ सकैए जे माँठक छी । गाँडी-कमन ने नगि सकैए । रँड हएत तँ रौनरी जहनी हएत । जे अपने अष्टारक कपमे जीरन पाव करैत । झुदा जे होग अनावक जेठामेठ आ पोखरिक घाँठक अषिकाव तँ ओकवा छुगहे । खेतीक स्थिति रिंगडने खेती अश्रित कर-कावखाना केना नगि पौत ? कावखानाक रौत तँ कनी दुव, जे नगक काज भेर जे रिन घासक खेतीस मरेशी पानन केना हएत ? गीत गौने तँ ने हएत की मिथिनाचनमे दुपक धाव रौह छेलै । जेठाम भोजनक अस्वरिधा बहत, काँच घब बहने बखेक अस्वरिधा बहत तेठाम घास कँठैरना, दूध दूहैरना हाथक कोन काज । दहेना पट्टाति सम अष्टियेने रौपेक सम अ ने बँह छै, जँ जीरँठ रौहि रौपनो जाग छै तँ हसिन रिनम भेने अगिनारकेँ अगु धकेलि दग छै । जग धकना-धकनीमे हँसन अपन राजिरँ उपज ने द२ परैए । रौठा -रौदी सभ दिनस होगत आएन अछि आ अगुओ हएत ? दूनु मूसमी खेतीक रौधक छी । ई रौधकेँ केना भगौन जग ? पोखरिक माँठक तँ यएह स्थिति हएत, ने रौदी भेने हएत आ ने रौठा सँ रँचा पएरँ, तखनि ? उदास भेर सुवजाकाकारकेँ रँसन देखि चुननुनियँकाकी अरिँ चहकनी-

“कथीक सोग सैसन अछि जे नीको मनकेँ अनेरे मावि क२ रँसन छी । रौध-रौनस एनो हन तँरधन हएरँ, नरँ द२ छिड़ा एनहा काजकेँ सम्भावि नहाएरँ-खाएरँ अखाम कवरँ कि अनेरे झुवदा जकाँ मन मावने छी । ”



बाम रिवास साहू रिहनि कथा-

शिक्षाक महत

जीरँड घबजमेया छत्र । हुनकब पनी बपिया, माए-रौपक एकनौती रैष्टी रँड दूबाबि छनि । बपियाक पिताकेँ चाबि रीया चास-रौस, कनम-रौस आ गाए-रँडद छत्र । खेती-रौड सँ जिनगी चले छेत्रनि । सोनमतिया बहने कोनो झर-कपष्ट ले बहनि । पितमक छत्रा । परिवारबमे अझबक रौप केकरो ले बहनि खानी जीरँड ठ-रँ कए क२ साझब छत्र । बपियाक पिता जकबति पड़नापब जखनि समाजमे कोनो जेन-देन करै छत्रा तँ गुँठेक निशान दग छत्रा ।

एक सार एहेन समए भेलै जे अनाकक अनाका रौटा -पानिसँ दहि गेलै । ने नेरान करैले अन्न आ ने दाँत खोदहने नाब-पुखाब भेलै । दोसब सार रौदी भ२ गेलै । एक तँ रौटा क माबन, दोसब रौदीक जवन । गबीर-गुबराकेँ गुजब कठनाग पहाड भ२ गेलै । केतेको परिवार तँ खान-खान गाम अपन-अपन रुईमेती जा किछ दिन समए कष्टकर । झुदा अ सुरिषा सरँहक नशीर ले छेलै । गामक नमहब जमीनदाब, मानिक-गुमस्ता जे छत्रा हुनका तँ पहुरके सारक पुवना अन्न रँखाबीक-रँखाबी भवर छेत्रनि । हुनका सभकेँ कोनो चिन्ता ले छेत्रनि । बपियाक माए-रौप रूठ बहने खान गाम जा केना काज कबत । ओ दुनु गामेमे मानिकसँ कहियो मकखा तँ कहियो धान तँ कहियो छुँटी चाडब कर्जा न२ समए काँष्टे छत्र । कर्जा देनिहार मानिक सभ रिपतिक समेमे गबीरक शौषण सेहो करैत । एक मन अन्नक रँदना दु मन आ दोसब सार चूकेनापब तीन मनक कवाबीपब कर्जा नगरेत । तेकब रौदो गुँठाक निशान एकठारकेँ के कहए जे तीन-तीनठा छाप कागतपब नग छेत्रनि । गबीर अपन पवान रँचाएत आकि छापक पवराह कबत । कर्जा खेनिहार थोड़े रूने छत्र कि छाप देरै कागतपब आ हमब जमीन जत्था चलि जेते तक्थापब ।

एक दु सार समए रिंतलै । जीरँड अपन सौसुवागबिधमे सासु-ससुबक सेरा आ खेती-रौड ी क२ गुजब-रँसब करै छत्र । किछ समए पछाति सासु-ससुब मबि गेलनि । श्राद्ध-कर्मसँ निरृत भेलै छत्र आकि गामक मानिक-गुमस्ता लोकनि अपन-अपन कागत न२ जीरँड ईगाम पहुँचए नगरा । कर्जा तँ कवाबीपब देने बहनि । ओ अरिषि रीति गेल छत्र । कर्जा खेनिहार पहिले कागतपब छाप देने बहनि । ओग कागतपब मानिक-जमीनदाब लोकनि जमीनक खता-खेसवा बकरा निधि क२ अपन नाँ क२ नेरनि । गबीर सरँहक जमीन मानिक-गुमस्ता हबपि नेरकनि । जगमे बपियाक जमीन सेहो चलि गेल । आरँ जीरँड-बपियाकेँ दुँठा रैष्टी, एकठा रैष्टी आ परिवारक भवन-पौषण कवनाग कठिन भ२ गेल । जीरँड कमाग खातीब रौहब चलि गेल ।



राहबमे पठन-लिखन खादमीके नोकरी जल्दीए होग छेलै खा रैसी दबमाला सेहो भेटै छेलै । जीरद्ध रैसी पठन तँ नै झुदा साम्भव छन । जगसँ शिक्षाक महत जिनगीमे केतेक होग छै से मोने-मन महशूस करै छन ।

जीरद्ध ठ-र-ठ काए कहूना क२ चिष्टी लिखि घब पठेनक । ओगमे रैषी-रैषीके पठरैले बषियाके प्रेषित करैत कहै छन जे पठ ागमे जेते खबच नगत, हम कमाए क२ पठाएरँ झुदा खहाँ पिया-पुताके पठरैमे कोनो कोताही नै कवरँ । बषियो मोने-मन सोटे छेली जे नीक लोक रैनराक लेन शिक्षाक रँड महत छै । जे हम खा हमब माए-रूप जँए नै पठन छेलौं तँए नै सभलै जमीन मातिक-गुमस्ता हबपि लेननि । जखनि पठन बहितौं तँ ङा झुसिरँत नै खरिताए । हम सभ जे केलौं से केलौं झुदा पिया-पुताके जकब पठ ाएरँ । खगले हमबा जे पबिश्रम खा तियाग कबए पडत ओ कवरँ । ओ सभ दिन अपन पिया-पुताके समेपब संगे जा सकून पहुँचरँए नगरी ।

बषियाक छेलेमे रूचचा रौरू छना । रूचचा रौरू खचनमे रौड ारौरू छथि । दुष्टीमे घब खधन छथि । हुनका कान्ति बोरे छैन पकडा दुष्टीपब जेरौक छेननि से बषियाके कहनथिन-

“बषिया, किद्ध सामान खधिक खडि । गाममे कएक गोष्टेके कहनिर्ष जे कान्ति बोवके छैन पकडरँ से कनी सामान सृष्टेशनपब पहुँचा दिख, झुदा कियो तैयाब नै भेन । तँ कनी पहुँचा दग । हम तोहब रँड उपकाब मानरौं ।”

बषिया रौजनि-

“ठीक छै, कख रँजे चनरँ । कहि दिख हम समान पहुँचा देरँ ।”

रूचचा रौरू रँजना-

“सात रँजे बारेमे चनरँ । किएक तँ खार्ठ रँजेमे छैन छै । तीन-चाबि किलो मिष्टब सृष्टेशन दुरो छै ।”

बषिया बोरे उठि सभ काज क२ जतथे रँना पिया-पुताके खगले द२ रँजनी-

“तँ सभ जल्दीसँ खो, खग कनी पहिनहिए तोबा सभके सकून पहुँचा दग छियो, तखनि रूचचा रौरूक समान पहुँचरैले षीन जाएरँ ।”

एम्हब रूचचा रौरू तैयाब भ२ बषियाक रँष्ट तके छना । पाँच मिनठ पड्ढाति बषिया पहुँचनी । रूचचा रौरू तमसागत रँजना-

“बषिया, तोबा कहने छेलिओ साते रँजे चनेले, देवी भ२ गेन । छैन छुष्टि जाएत । तोबा कोनो चिन्ता नै ।”

बषिया रँजनी-

“खपने तमसाड नै । धीरे-धीरे रँट्टु हम समान लेने नहबन पिष्टपब खारि बहन छी । कनी पिया-पुताके सकून पहुँचरैमे देवी नागि गेन ।”



बूछाी बाँबू-

“पहिले सामान पहुँचा दगते, हमबा ट्रेन छुट्टि जागत । एक दिन तोहब रैष्ठा-रैष्ठा
सुकून ले जेतौ तँ की हेते । एक्क दिन कोनो पढ़ा कइ कनकूब रँनि जेतौ ? ”
बधिया मोने-मन सोचए नगनी, कह छियनि आगु रँटले से उठिअ ले होग छन्हि ।
हम तँ नहबन हिनकासँ पहिनहि पहुँच जाअरँ । ट्रेन थोड़े छुटतनि । अपने रैगबते
आन्हब छथि । अपने गढ्ढौ ।

2

सूर्यरव

(एकांकी नाटक)

जगदीश प्रसाद मण्डव



जगदीश प्रसाद मश्रव

जन्म- ३ जुलाई १९४१

पिताक नाँउ : स. दन्तु मश्रव, माताक नाँउ : स. मकौरती देरी, पत्नी- श्रीमती वामसखी देरी, पुत्र- सुरेश मश्रव, उमेश मश्रव, मिथिलेश मश्रव । मातृक- मनसावा, घनश्यामपुर, जिला- दवलगा ।

युवगाम- रैवमा, भाया- तनुबिया, जिला-मधुबनी, (रिहाब) पिन- +४१४९०

मोबाँगर- ०९९३९७३९४२

शिक्षा- एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्यायन । दिनकर कथामे गामक लोकक जिजीरिषाक वर्णन आ नर दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होगत अछि । गामक जिनगी नमूना संग्रह लेल रिदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगावे साहित्य सम्मान २०११; एरँ रौत-श्रेवक रिहनि कथा संग्रह “तरेगन” लेल रौत साहित्य रिदेह सम्मान २०१२ (रैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार कर्पे प्रसिद्ध) प्राप्त ।

साहित्यिक प्रति-

उपन्यास- (१) मोनागर गान्धक फुन (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीरन-मवण (२०१०), (५) जीरन संघर्ष (२०१०), (६) नै पाड़ैए (२०१३), (७) रिधरा-सधरा (२०१३), (+) रँडकी रँहिन (२०१३)

नाटक- (१) मिथिलाक रैषी (२००९), (२) कम्पामागज (२०१०), (३) नमेलिया रिखाह (२०१२), (४) बनोकक डकैत (२०१३), (५) सुर्यारव (२०१३)

नमूना संग्रह- (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अह्मिणी... सरोजनी... सुभद्र... भागक सिनेह अत्यादि (२०१२), (३) सतलैया पोखरि (२०१२) उतराँ चाँव (२०१३)

रौत-श्रेवक रिहनि कथा संग्रह- (१) तरेगन (२०१०)

रिहनि कथा संग्रह- रँजनता-रँमनता (२०१२)

एकार्क संग्रह- (१) पँचरँगी (२०१२)



दीर्घकथा संग्रह- (१) शैलुदास (२०१२)

कविता संग्रह- (१) अक्षयनृषी अकास (२०१२), (२) बाति-दिन (२०१२), सतरेष (२०१३)

गीत संग्रह- (१) गीताजति (२०१२), (२) तीन जेठ एगावहम माघ (२०१२), सविता (२०१३)



मिथिलाक बृन्दारनसँ वऽ कऽ बाबूक टेकपव रौसव
शुवराड १ वगोनिहाबकै
एर
नर रिहान खननिहाबकै
समर्पित



पात्र पविचए-

प्रकष पात्र-

१. मकशुदन- २२ र्थ ।
२. सोनेनान- ३२ र्थ ।
३. सिहेश्वर- ३३ र्थ ।
४. कपनान- २२ र्थ ।
५. जीयानान- ४३ र्थ ।
६. मोहननान- २१ र्थ ।
७. रौदी- २२ र्थ ।
८. मोहननान- २२ र्थ ।
९. किशोब- १३ र्थ ।

नावी पात्र-

१. वृषनी- ३० र्थ ।
२. ककुमिणी- ४२ र्थ ।
३. स्वशीता- २० र्थ ।



पल्लि दृश्य-

(सोनैतारक दतान । रैबका समए । दतानक ओसाबक टोकीपब सोनैतार रैसत आँथि रँग केने किछ सोचि बहत छथि । मकशुदनक प्रवेश ।)

मकशुदन- काका, छेता रैसाबी भ२ गैत थछि । थछू जेना कानमे तूब-तेत द२ देनिई ।

सोनैतार- हो, कानमे तूब-तेत कहाँ देनिई हें । केना उपकवि-उपकवि त्रोककेँ कहरै जे हभव काज छह । थनेरे रौरू जन त्रै तँ सतबह रौपूत थपने छी ।

मकशुदन- उपकवि क२ केकरो ने कहरै, झदा काजक उचाटा तँ नगा सके छी । त्रोको सभ तेहेन पनिमक भ२ गैत थछि जे थपनो काज पछुथरैत बहत झदा समैपब काज ने कबए चाहै ।

सोनैतार- हो, त्रोककेँ कि दोथ देरै, सभूषा समैक किबदानी छी ।

मकशुदन- समैक की किबदानी छी ?

सोनैतार- तेहेन ने जूग-जमाना थारि गैत जे जेहो किछ पुँछे छत सेहो थपने मने मतंग बहै । किछ कहितो सकोच होए जे कही किछ कहरै था उनष्टे झह दूसए नगए ।

मकशुदन- हँ, से तँ रैस कहनौ झदा कनियेँ काजक चाति था झहक रौरू रँदनेक काज थछि । जथनिए से कबए नगरँ थनेरे जूग सर्ग चति गुत । जूग सर्ग भेन, जमानाक हाथ पकड एन ।

सोनैतार- कहनह तँ रैस झदा चाति ने जिनगी था रौरूने ने गज्जत छी, जँ सएह उनष्टि-पुनष्टि जाएत तथनि तँ जिनगीने ने उनष्टि-पुनष्टि जाएरँ भेन ।

मकशुदन- हद करै छी थछू काका, एतरौ ने सोचे छिई जे कोनो रसक सेथी दिने भवि बहै, थनभावमे केकवा के देथे । केकब ओहन आँथि छै जे देखत ।



सोननार- हो, कहनह तँ ठीक, झुदा देखे छी जहिना गाम-घबक लोकक ठेकान ले छै तहिना तँ बाजो-पाठक सएह छै । केम्हब कि कबरँ से बूनेएमे ले थरैए ।

मकशुदन- बाज-पाठक कि देखे छी ?

सोननार- की देखे छी से तँ ले देखे छहक । हाथमे एठेची लेने खाँफिस पहुँच जा, पैघ-से-पैघ काज हाथक-हाथ करीने चलि आरँह । झुदा, जँ से ले न२ क२ जेरँह तँ रँडका खाँफिसकेँ के कहए जे छोटको खाँफिसक काज सार-सार भवि नठकने बँह छै ।

मकशुदन- काका, ओते जे मगजमारी कबरँ से पाव नागत । केतो आगि नगो आकि रँज्जब थसो अपन हबथी उतरँक थछि ।

सोननार- हँ से तँ रँस कहनह जे खनेरे खनका दिस झँह तके छी । जखनि एके सबकावमे मनीओ सरँहक रीच मिनान ले बँह छै, एक-दोसबाक काज ले बूनेए, तखनि जनताक तँ जनबदने मानिक किने ?

मकशुदन- हँ, तँ आरो कि । खनकब भजन करैसँ नीक जे अपन दूखनामाक भजन करी ।
(रौदीक प्रवेश)

सोननार- रँड हनचनएन देखे छिख रौदी । केतो किछु भेन थछि की ?

रौदी- सुनलौं हन जे गाछ नगरँने सबकाव गाछो दग छै आ देखभान करैने कपेओ दग छै सएह कनी ग्रामसेरकसँ भैँठे कबए जाएँ ।

सोननार- जखनि ओहन काज छेनह तँ पहिने ओम्हरेसँ ने भेन थरितह ।

रौदी- ओम्हबका कोनो ठेकान थछि जे कखनि हएत कखनि ले । तगने अपन मुड रँनएँ छोड़ा देरँ । तोछमे सौमूका समए छी । ओहो जारँ भवि मन पीरँ मुडमे ले थरैए तारँ कि सोम डारिब किछु रँजेए ।

सोननार- हँ, से तँ हमझँ सुने छी । झुदा सभकेँ अपन-अपन खाँच होग छै । जेकवा-जेकवा सर्ग खाँच रँसि छै तेकवा तेकवा नेन मुडक जकबी ले पड' छै । सदखन मुड रँनने बँह छै ।



- रौदी- काका, खाँच रैसिने एकलुक जकबति होग छै । तगने तँ मने ने बाजा छी । सोचलौं जे अपनो भाँग पीरौक समथ भगथ गेन, से ने तँ मुड रँनौने जाए जे सब काज करौने थाएरँ ।
- मकशुदन- भजाव भाय, कथा सरँहक गाछ छै, हमरो मन होगथ जे खनेरे तीन कर्छा हगनाव रँनौने छी । ओगमे गाछीए नगा देरँ नीक हएत ।
- रौदी- रँहवरँैया गाछ सब छी । अपना ईँठाम अथनि धरि कियो ने नगौने छथि । तँए कनी रँसी मन भ२ गेन अछि ।
- मकशुदन- कोन रँहवरँैया गाछ सब छै ?
- रौदी- सरँहक नाँउ तँ ने रँूमन अछि ह्नुदा एक-आधँक नाँउ मन अछि । ओ छी सागरान, महोगनी आ सौँथ ?
- सोनेनार- (ह्नुका दैत) हन केहेन होग छै । आमसँ नन्हव आकि छोट ?
- मकशुदन- अहँ भासि गेलौं काका । आमो तँ सब अकावक छै किने ? सजमनिया, घीरँहा सजमनि जकाँ होगथ आ रँवरँिया सुपावी जकाँ ।
- रौदी- ओ गाछ हन ने थोड़े नगौन जागथ । ओकव नकडँी सुन्नरो आ सकतो होग छै, जगसँ घबक समान नीक रँनेए । तँए महग रिकेरौ करैए ।
- मकशुदन- किनते के ? धनिकाहा कोठा-कोठा रँनागथ नेने अछि रँकी अछि गबिरँहा । ओ कि कबत ओहन नकडँी । ओकवा तँ जिनैरीओक तहतक केरौड जँ घबमे नगि जेते तँ भरि दसमी दूगस्थानमे साँम देत । (छिपरीमे भाँगक तीनँठ गौरी, लोँठामे पानि आ गिनास नेने रँधनीक प्ररेशी)
- सोनेनार- (पनीसँ) ईँठाम भाँग बथि दियो आ थमशिमे छह कप चाह आ पान-सात थिल्ली पान आनि क२ बथि दियो, अहाँकेँ छुँडी भ२ गेन ।
- रँधनी- अहाँ छुँडी देरँ कि काज छुँडी देत ।
- सोनेनार- पएव पकडँि कहँ छी अही खुँशी बहू ।



- बुधनी- खहीकेँ खुशीने ने खद्दु खरसुहामे सिनोई-नोठ १ बगडु छी, तँ कि बुनो छिई जे हम भंग पिसनिहाविष्णु छी । केतए देखनिई जे देरता पवसाद खाग छथिन आकि सुंहुनिष्णु नग छथिन ।
- सोनेनार- खथनि जाड, दोसब गपमे नागर छी । ने जे खद्दु गपकेँ गहियारैए चाँ छी तँ नर दह भाँग खेने खाड । तारेँ हमद्दु सब भाँग खा नग छी ।
- बुधनी- जे गप करै छी से जदी सुनि नेर तँ की होएए जे पनचैतीए कइ देरै जे एना ठारै छी ।
- सोनेनार- ठारै कहाँ छी रँठारै छी । खपखकखा गप सुनि जे सोसिका पनचैती कइ देरै तगसँ नीक जे ने सुनु ।
(बुधनी जागत खडि)
- मकशुदन- अँए यो कका, खहाँ रँनोक जेनाग छोडा देनिई जे खहीकेँ ने बुनन खडि ?
- सोनेनार- धवमागती पुछह ने तँ रँनोक दिस जागमे ने मन नगैए । समए छन जखनि बुनो छेनिई जे रँनोक हमरो छी न्ददा तेहेन-तेहेन... ।
- रौदी- अ राँत खहाँ ठीके कँ छिई कका, री.डी.ओ. छना चोषवीजी जे बसु-पेवा चोको-चोवाहा कागतपव दसखत कइ दग छेना हेन ।
- सोनेनार- चोषवी जीक रिषयमे बुनन छह जे केहेन पबिरावक छथि ।
- रौदी- खहाँ जकाँ हम थोडे रिडिओ साँहरक चोखवीमे रँसि छी जे केकरो जडाँ-छीप तारै ?
- सोनेनार- रौखा, खजादीक नड १गमे कानापानीक सजा परैरना पबिरावक छथि चोषवीजी न्ददा सब किछु... ।
- रौदी- न्ददा की सब किछु ?
- सोनेनार- किछु ने । रौखा खथनि भाँग ने पीनो हेन चाबि भविसक रँजरौ ने कएन, तँए नीक-खपनाक कोनो रिचाव ने करै छी, न्ददा भाँग खेना पछाति शिर जीक दवरौव जखनि पँच जाग-छी तखनि गर्गा स्नान कइ गर्गासागव धवि ठहनि-बुनि खरै छी ।



- रौदी- हमरुं उंगताएन छी काका, कि कहै तेहेन-तेहेन झूठ-गबहा सभ भवि दिन झुठि याबी देने बहै । जे पछुथाएँ तँ छुसि जाएँ ।
- सोनेनार- रौखा रौदी, जहिना भातीज मकशुदन तहिना तूँ छह । शिरजीक स्थानमे पहुँच गेल छी । आग्रक थाबीमे बखने अछि, हमरो लोक गामक ठीकेदारै बूनेथ ।
- मकशुदन- काका, रिना कावणे छैठही ले नगै छै । हमरो रजेमे धाक ले होगए । अरुंखेन-रैने देखने अछि ।
- सोनेनार- देखह, तूँ दोसब नजबिह बूमि गेलहक । भेल कि जे गामेक नाउपब रीस किनो धानक रीखा दइ दग आरँ कहह जे केना दु सए किसानक रीच रैथत ?
- मकशुदन- तेकब माने अ ले ने भेल जे सोनहोखना अपनेथा था जागए ?
- सोनेनार- तरुं रिसवि जाग छहक मकशुदन । उगरेब अठ १ग सए ग्रामरता तोड़ १ रीखाक जे पौकेठे अएन से तोरे ने सोनहोखना दइ देने बहिलह ।
- रौदी- अरुं सदिकार काका कगडे तकेत बह छी । भेल तँ अहाँ धानक रीखा सोनहोखना खेनिर्ष, तोड़ १क रीखाक जे अएन सोनहोखना मकशुदन खेतक । दू गौष्टे जखनि सोनहलीथ खेलौं तखनि तँ पनचैतीउ ने सोनहलीथ कहत । छोड़ु... ।
- सोनेनार- हँ, हँ, छोबह । एकठाम बहरँ तँ अहिना कनी तीत कनी मीठ होगत बहत, तगने लोक झुहाँ-झुली कइ नेत ।
- रौदी- काका, एकठा रात तँ रिसविथ गेल छेलौं ?
- सोनेनार- (सुनेक जिज्ञासा) की हौ, की हौ... ?
- रौदी- अहाँक बमचेनरौ घिनोरक ?
- सोनेनार- के बमचेनरौ हौ ? हमबा तँ गामेमे केतेक ने बमचेनरौ अछि । केकबा दे कह छह ?



रौदी- सोमसहेमे जे मकशुदन थुछि ?

सोनेनार- की भेन ?

रौदी- से ओकरेसँ प्रुछियौ ।

सोनेनार- की हौ मकशुदन ?

(मकशुदनक झूह लुठकर जगते, चुपचाप निचाँ झूहेँ झुड़ि गौतेन नगैते, प्रनः सोनेनारे रजेँ छथि ।)

सोनेनार- थुछा छोवह मकशुदनकेँ । तौही रौजह रौदी ?

रौदी- पवसुखन एकठौ रँगुगया दोस लुँजियाएन । रँगुगसँ थुएने बहए । सेठ ओकवा पवसादी ने एक किलोक कोन ने कोन बस देने बह । तग चठरैने हमरो थु मकशुदनोकेँ कहक, निर्माएण देक ।

सोनेनार- सोमसहे बसेठौ थुकि ओग नागर ओव किछ ।

रौदी- थुछूँ सभ दिन गमेए बहि गेलौँ काका । एक चमछसँ पेठेँ भरेँ छै । थुगओ-पीरैक ओवियान केने बह की । कि कहाँ ठेवी बह झुदा सभसँ नीक बसगुला बह ।

सोनेनार- रौचमे थुँठियाएन ने तँ बह । थुछा भेन की से रौजह ।

रौदी- एक तँ हम सभ लुंगथोका भेलौँ तछुमे दिनका ने रौतुका, तगमे ओ किदनिक बस पिथा देक । थुगुमे बसगुला देख मकशुदन चठरैए नगर । ओहो (घबरेया) रँगुग जे साझाते देरते पहुँच गेल । थुँजुव-थुँजुव देने जग थु झु (मकशुदन) चठरैए नगर ।

सोनेनार- एको दवजन चठरैक की ?

रौदी- थुँए, दवजने कह छिँए, पचाससँ ठुपा देक ।

सोनेनार- तथनि तँ रौदादुव, गामक ठेक बथक ।

रौदी- गामक ठेक, ठेक जकाँ बथेत तँ ने से थुगते- थुगते पक्षपव रौमकए नगर ।



- मकशुदन- खगमे हमब कोनो गतती ने बहे काका, बहे एतरे जे जग सीमानक जे नसेबी होगए ओ सब निसाँके एकू सीमा तक पचा सकैत । झुदा सीमे ने बूमि पेनिर्ष । भेन सम्ह, नर चीज बहे, नगले चढा गेल । खागकार बूमरें ने केनिर्ष, गम्बर रँडदक नाँगबि जकाँ पकड़ा-पकड़ा करुए नगल । रेंठेकान भ२ गेलै ।
- सोनेनार- खछा जे भेन से भेन, एकठा कहत रौदी, जखनि सागरौने नगेरँह तखनि आम-महू केतए रिंखाहरँहक ?
- मकशुदन- काका, खजू रँड बगड़ १ छी । पशुपति नाथक सुखेनहा हछी चरँरै छी । खछा, काका एकठा कछु जे कौलका घँकैतीमे खजू जेरँ ?
- सोनेनार- केकब जीयानारक ? हँ । कहने तँ छुथि झुदा जखनि रुजँहतेमे पड़ छी तखनि होगए जे खनेरे कोन रुता-रँषिया कबए चलि एलौं झुदा जखनि खठ १ग सए बसगुला खा पाँच किनो मासुक खागि पेष्टमे रिताग जकाँ रुदैए तखनि... ।
(बुधनीक प्रवेशे)
- बुधनी- निबनज हूरँ जे घँकैतीमे जएरँ । जिनगी भवि तँ घिनेनहे काज केनौं खारौं चेत् । रिंखाहक जे रँषियाती चौरूस घँक छन, ओ भेन चाबि-पाँच घँसँ एक घँस । तगमे केकब झँह के देखत ?
- सोनेनार- खहाँ घब खाँगनमे बहे छी, गामक रात ने बूमरें । जखनि रँषियातीमे जाग छी खा गौखाँ खागरँना खनीहा सँ पला पड़ छै, तैठाम गामक पाग जँ गामक लोक ने बाखत, तँ खनगौखाँ केकबा के मदति केनके हेल ।
- मकशुदन- मन हमरो जागक ने होगए, झुदा ग्वक भ२ क२ खहाँ जाग खा हम सँग छोड़ा दी, गहो तँ पापे हएत किले ।
- सोनेनार- तौवा किखए घँकैती रँकछहन नगै छह ?
- मकशुदन- बूमनो रातकेँ खहाँ तेना ने कहे छिँ जेना खहाँकेँ किछ बूमने ने हूँख ?



सोनेनार- कोनो कि एकठा काज एकवंगक थडि, काज-मे-काज गाथर थडि । कनी दुब रोजह, मन पडा जाएत ।

मकशुदन- गंगरी रिंखामे ले देखनिई, दनु पम्क तेना उल्लव रना देवक जे छुगुल्लुमे बहि गेलौं । जदी थपना काजके नक रना करैत तखनि नक रात भेल । झदा नक काजके थपना रना दगए, से... ?

सोनेनार- पिंखजू जकाँ सोहित जेरह, केतो ले किछु भेततह । झहेमे सभठा छै । केतो देखरहक जे कहतह- “दस मिन कबी काज, हावने-जीतने कोनो ले नाज । ” झदा दोसब चौकपव जागते-जागते कह छै, “संग मिन कबी काज, हावने-जीतने कोनो ले नाज । ” आ केकब संग ? संगीओ तँ संगीए छी ।

पठाम्फेप

.



दोसब दृष्ट-

(दलान नमहव । ओसबक एक भाग एकठाँ षैरून चाबिष्ठा रूवसी नागर । दोसब दिस षैरूनक रीच रूवसी नागर । षैरूनपव देखनुक रसु बाखत । रीचमे सिहेष्विव ठाठ । एक भाग मोहननान आ मोहननान रैसन । दोसब दिस कपनान रैसन ।)

कपनान- (रूड १ उठा वस्तु दिस देखि) केते रैजेक समए देने छना सिहेष्विव काका ?

सिहेष्विव- आरँ कि हमवा सरँहक जुग-जमाना बहन जे समेकेँ समए रूमि लोक चरत, आरँ तँ गाड़ १-सराबीक जुग एले । वस्तु राँठमे तेते कजापव रँनि गेल अछि जे जखने पहुँच जाथि तखुनके समए ।

मोहननान- काका, आ कि कहि देखिँ, 'हमवा सरँहक जुग-जमाना' ?

सिहेष्विव- रौआ, अखनि तँ सब कोनेजमे पढ़ छह जखनि जिनगीक कोनेजमे पढ़रँह तखनि हमवा राँतक माने नगतह ।

कपनान- काका, नस्तु-पानीक तँ ओबियान भगए गेल अछि तखनि गुंगतागए कथीक अछि, कनी एँ राँतकेँ सोनवागए दियो । एते तँ जकव रूमि छी जे पहिने जकाँ चाबि गारे एकठाम रैस जिनगीक गप नै करैए ।

सिहेष्विव- देखहक, एना जे जहपुँठव रँजरँहक तँ सरानक पथाव नागि जेतह, जे समरँरँ पाव नै नगतह, तगसँ कि हेतह जे कोन सरानक जरारँ की भेल से ओमवा जेतह तँए... ।

मोहननान- अहाँ रिचावकेँ हमरँ मानै छी काका, कपनान भायक प्रश्नकेँ पुबक प्रश्न मानि लिख । जँ समए भेँरँत तँ कहि देखि नै तँ राँकी बहननि ।

सिहेष्विव- ओना मोहन तोरो सरानक उँतव नीक जकाँ नहियेँ देखँह, किअ तँ मन चोचंग अछि जे हुनका सरँहक (रँवतुहाव) समए भँ गेल । दसे रँजेक समए देने छना सराँ दस रँजेए ।

मोहननान- चाक दिस तकरँ छोड़ा काका अदहो-छिदहो किछ कहियो ?



सिंहेश्वर- देखहक मोहन, जूग-जमानाक भीतव रँहूत बास रात खडि झुदा तेतेमे ले जा खथनि रिंखाहक गप कबह ।

मोहननाम- (झुझी दैत) हँ, हँ, रँडरँटा याँ, रँडरँटा याँ ।

सिंहेश्वर- ओना दुष्ठा रिचावणीय रात खडि, झुदा समैक ब्रकमवुकी दुखारे पहिने रिंखाहक रँबियातीक रात कहे छिख ?

कपनाम- जखनि कहे छिई तखनि दुनु घाँट मिना क२ कहियौ, जेगसँ धावक दुनु महावक सीमा रँनि जाए, तेना क२ कहियौ ।

सिंहेश्वर- बुंमने छह जे धनिकपाना ठाँठामे पठनौं कम रँजनों रँसी, से साखे कहि दग छिख । अपना ईँठाम धर्मसूत्र-गृहसूत्र रिषयपव ऋषि-झनि सोचि-रिचावि अपन रिचाव बखनि ?

मोहननाम- ओ सब तँ साम्कात् सबसुतीक रँडद पत्र छना, जे खथनो ओहिना ठँक-ठँक खहाँ दिस तके छथि ।

सिंहेश्वर- हँ, से तँ छेनाहे । अपना ईँठाम रिंखाह परिवारक सर्ग समाजोक महान यज्ञ छी । ई यज्ञ नेन चौरूस घँठोक समए निर्धारित भेन । जे आग्रहपव खडतानिसो घँठोक भेन आ दुवाग्रहपव घँठे भरिक भ२ गेन, झुदा खखुनका जकाँ मडराँ पवहक रँव जकाँ घुब-रँछुब एते ले भेन ।

मोहननाम- नडका-नडकीक (रँव-कन्या) पुढ केते छन रिंखाहमे ?

सिंहेश्वर- सोनहली छन । जेकव जीरंत उदाहवण सीता सुयंरव छी । कहाँ दशेवथ बुंमियो सकना जे रँँठोक रिंखाह जनकपुवमे छएत । एहेन सुयंरव सिबिह सीते ठँक ले भेननि, समाजक रँीच चननि छन ।

मोहननाम- चौरूस घँठोक समए नेन कार्यक्रमो तँ निर्धारित बहन छएत ?

सिंहेश्वर- निश्चित बहन खडि । प्रश्ना नाहिँठे ले नमहव खडि । ओ ङा खडि ङा समाजक सर्ग दु रँैकूतीक ओहन मिनन छी जे दुनियाँक रँगमचपव आरिँ बहन खडि ।

कपनाम- सिंहेश्वर काका, बुंखे भजन ने होग गोपाना खानी रँवे-कन्या, रिंखाहक गप कवरँ खाकि किछु खनजनेक गप हेते ।



- मोहननारन- काका, नस्तु-पानीक कथी ओबिधान केने छी ?
- सिंहेश्वर- एना पिया-पुता जकाँ अनाड ी किअथे बुँवै छुह जे अ-आ सिथरै छुह ?
- मोहननारन- काका, अहाँ दोसब हिसारै हमबा गपकेँ बुँमि गेरिर्ष ?
- सिंहेश्वर- मोहन रैष्ठा-भातीज छिअ, एकब माने अ ने जे तोबा रिचावकेँ कदब ने कएन जअ, झुदा अथनि तँ मने चोचंग अछि ने तँ... ।
- कपनारन- अनेरे अहाँ मनकेँ चोचंग केने छी, अछा अहाँ कनियेँ रिठमु, हमसरँ सब सर्वजाम देखने अरै छी । पबसने तँ सतबह रापुत छीहे, ई रातकेँ सम्पन्न क२ दियौ ।
- सिंहेश्वर- आगक जे रँबियाती आकि रिंआहसँ पहिनुक जे प्रफिया अछि, जेना हथपकड ी, नडु पान तिनक अवादि-अवादि जगमे थेनाग-पीनाग चलेँए, ओकब की कप छै समाजमे ?
- मोहननारन- अहाँ जे रात कठ छिर्ष ईसँ तँ समाजे रँहराडा भ२ गेन अछि तथनि... ?
- सिंहेश्वर- (झुड ी डोतरैत) रिंकुन सत कहनह । एहनो होगए जे एक गामसँ दोसब गाम अरै-जागक आग्रहो होगए आ एहनो तँ होगते अछि जे माडु थागने पबसु अरै छी ।
- मोहननारन- अनेरे कोन थता उपछे भाँजमे पडन छी ओकब आडा ए गिनगब माष्टक छिर्ष, कथनि छुँष्ट जअत से बुँमरौ ने कवरै ?
- सिंहेश्वर- हँ, से तँ अछिअ । झुदा अनी समाजमे ने जीरो करे छी । तेकबा निमाहित चनी सएह ने नीक छुत । झुदा रिचावणीय प्रश्न तँ अछिअ जे एक-काजक नेन एक निअम रँना चनरँ आ यत्र-कुत्र चनरँ, समजक रँधनकेँ ठीर करैअ ।
- मोहननारन- थेब छोडु । रँड नमेन बुँमि पड'अ । जे कियो रँबतुहाब ओता हुनका भवि मन अुएरँनि किने ?



सिंहेश्वर- यएह भावी रात भ२ गेल खडि । एक दिस लोक भवि दिन योगात्तासेक चर्च करैए दोसब दिस खाग-पीरैक ठेकाने ने छै । भवि मन खुआएर खसान खडि ।

मोहनरान- से की ?

सिंहेश्वर- देखे ने छहक जे राप-रैषा एकठाम रैस रौतन-शीशी पीरैए आ नैतिकताक भाषण करैए । ओना अपन परिवारक पीरैक चलैन रनि गेल खडि तँए पीरैक ओवियान कि कबरँ ओ तँ बहिते बँह छै । चाबि-पाँच गोष्टे ओता एक गोष्टेक चाबि-पाँच दिनक खोवाक भेल । झुदा एकठा रात... ।

मोहनरान- (खकचका क२) की एकठा रात ?

सिंहेश्वर- अपना सब एक गामक छिई तँए एक समाज भेलिई । जखने एक समाज भेलिई तखने सरहक जरीन-मबन भ२ गेल । किएक तँ समाजक प्रतिष्ठा रैकतीक ने समाजक होग छै । तँए एक रनि हुनका सब (रैबतुहाब) सँ डस्टि क२ सुखागत करैक छह ?

मोहनरान- काका, कोन मबदुआवी सरान उठा देलिई, आरँ कि ओ जुग-जमाना बहन । आरँ तँ एक आदमी पचास आदमीक सुखागत क२ सकैए ।

सिंहेश्वर- देखहक रौखा, अपना समाजमे रूठरै लोक सब दिससँ आएन खडि जे जेकब नून खागए तेकब सबियत दिई ।

मोहनरान- तगमे कोनो सन्दह रूमागए ।

सिंहेश्वर- राजनपव रँजे छी, अपने राँरक थिप्सा कह छिख । राँबीकक दुआरे भोज घिना गेल । झुदा तैयो समाज तँ खथाह सझ्द छी एहेन-एहेन होगते एलैए, ताधवि होगते बहते जाधवि समाजिक तँव कमजोब बहते ।

मोहनरान- अखनि हम सब परीक्षे पास करै दुआरे प्रश्नातुरेसँ काज चलरैत एनौ खडि तँए ओ सब रात ने रूने छी ।

सिंहेश्वर- देखहक, अपना गाममे कि हमबा अपनो परिवारमे सुनीन पहिन डाकठब रँनत तीन महिना पछाति सँष्टिफिकेष्ट न२ क२ एरँ कबत ।



मोहननार- ह, से तँ सुनीत पढाँ ओमे सभ दिन नीक बहना ।

सिंहेश्वर- ईँठाम प्रश्न सुनीतक अछि आकि समाजक । हरेनहो-भोखनेहोक रिखाह दस लाखक भ२ गेन अछि तैँठाम तँ ओही नजबिअ ने देखअ पड़त ।

कपनार- से तँ देखै पड़त । जँ से ने देखरँ तँ खान समाज कौन नजबिअ देखत ।

सिंहेश्वर- खान समाजक रात किअ कहे छह, अपनो रिचाबि क२ देखक जे मकखा-गहूम अके भेन ?

कपनार- काका, अहाँकेँ सभ पीछवाह कहे छथि तँअ अहाँसँ झूठ नगाएरँ गर-थोखबि हएत झूदा कि मकखा अन्न ने छी ?

सिंहेश्वर- हद करै छह कपनार, के कहे छह जे मकखा अन्न ने छी, ओगमे आयबन ने पएन जाग छै । केबनक लोक जे पढाँमे ओते तेज अछि से किअ, ओकब खानो-पान तेहने छै ।

कपनार- तखनि ?

सिंहेश्वर- हम से ने ने कहे छिअ । कहे छिअ जे मकखा अन्न छी, ओगमे पौष्टिक तन्न सेहो पएन जाग छै झूदा, अन्नके जखनि रिनगैरँक तँ रूमि पड़तह जे अन्न कि सभैषा अन्न छी । कौनो कखन छी तँ कौनो सुखन । मकखा, शीम-कौन गलादि कखन छी ।

कपनार- श्यामा चाडव कतएसँ अरै छै, जेकब तसमे पैघ-पैघ स्थान सरँक भोगा अन्न छी ।

सिंहेश्वर- देखक कपनार, जनराहक अन्नकुन अन्न, फन, फुन गलादिक ग्रहण धवती करैत अछि । ओना किछ प्रधति प्रदत छै जे धवती अपनो पावण क२ नगए झूदा किछ मनखोक अछि ।

(आगु-आगु सोनेनार हाथमे रैँत नेने, तग पाछु रौदी-मकशुदन आ तगसँ पाछु जीयानार छुता नेने प्ररेशि । कनी फडाँ क्लमे कपनार मोहननार, मोहननार ठाठ होगत)



कपलान- कुँम नारायण सभ आरि गेला काला, अहाँ रैसले बह, रतबसिया छी
अहाँ ।

सिहेश्वर- आरि तँ उमेवा भेल किने ।

कपलान- ठेहन ठीक अछि किने ?

सिहेश्वर- ठेहन कहाँ ठीक अछि, जहिना रौहि कनकनागत बहए तहिना ठेहनो ।

(चाक कबसिपव चाक गौष्टेकेँ रैसरैत कपलान, मोहनलान आ सोहनलान
दोसब सबबिक कबसिपव रैसत । तग रीच एक गौष्टे तसतबीमे दस-
राबह गिलास ठंडा नेने अरैत । समाजरना ठेरुनपव बधि गिलास उठा
आगु रँटा सोनेलानक आगुमे बथेत अछि ।)

सोनेलान- रौंड, ग किअ थनलौं । हम सभ कन्यागत छी आगु रँटा केना अह
ईंठाएँ ।

सिहेश्वर- अपने शिअवीए रौत कहनिई । अदा समाजो आ समाजक रीच परिवारोक
एहेन रेरहाव होग छे जे शिअवसँ हष्टियो क२ होग छे । मानलौं अहाँ
कन्यागत छी अदा अथनि तँ रैठेही छी । जअनि कथा कुँमेतीक चर्च
चलत तअनि ने अहाँ कन्यागत आ हम सभ रँवपसक हएँ अदा अथनि तँ
से ने भेल अछि ?

सोनेलान- कहनिई तँ रैसरौत अदा दनु गौष्टेक मशिा की अछि ? यएह ने हम
अपन रैठीक रिआह कवरँ आ हम रैठीक ।

सिहेश्वर- अपनेक सभ रौत मानल अदा कन्यागत आ रैठीक रीच जे सीमा अछि
ओगठाम शिका तँ अछि ।

मोहनलान- कुँम नारायण, ग सभ पुवना जमानाक चलैत भेल, समाज रँदलन, समए
रँदलन, लोक रँदलन, रिचार रँदलन तग सग रेरहारो रँदलत किने । ओ
सभ छोटू । जहिना अहाँ कहे छी कन्यागत तहिना सिहेश्वरकाका, भेला
रँवपसक । हम सभ समाज छी, समाजिक कपमे आग्रह करै छी ।

सोनेलान- ऊँ समाज रँनि कहलौं तँ सहर्ष सुकाव अछि ।
(ठंडा गिलास चाकगौष्टे हाथमे उठरैत अछि । तही रीच चाह-रिंकुठरना
अरैए । कियो हाँग-हाँग ठंडा पीरै नहोए तँ कियो अक्करेवमे पीरै



जागए । कियो हाँग-हाँग चाह पीरैए नगैए । तही रीच एक गोष्टे
पाँचमेरौ नने खरैए ।)

सोनेनार- जहिना खहाँक समए खडि तहिना हमरो सरँक खडि । तँए नीक हएत
जे झहो सभ चलेत बहते आ गपो-सपो चलेत बहते ।

मोहननार- कहनिई रँड सुनव रात कहुँम नावायण झदा यएह तँ छी जिनगी ? जे
पियो-पुतारैँ खपना हाथे किछ पठ १-लिखा ने पुरैँ छी । झदा खाशा
करै छी खपनेरँना बुधि होय । पठते खनकासँ बुधि हेते खपन ।
जेकवा पठरैँक नुडा ने छै, झदा जिनगीक जे फिया-कराप छै,
जेपव जिनगी ठाठ छै ओ तँ छुगहे ।

सोनेनार- रँटा याँ रात कहनिई, ओछागनपव माए-रौप पडन काहि काँष्ट बहना खडि,
झदा सेरा नेन समए कहाँ खडि ।

मोहननार- (पाँचमेरौक झुकड १ झँहमे लेत) कहुँम नावायण, नडकीक कि योगता
डुन्हि ?

सोनेनार- डकठरी पठ छथि । खँतिम रँवखक छह मास शेष बहनि खडि ।

सिहेश्वर- नडका-नडकीक जोड १ एक-तबक खडि । झदा कष्टमेतीमे तँ तीन
जोड १ नगरँ पड छै । जहिना रँवियाती तीन मन, तहिना ने
घबदेखीओ एक जोड १ नडका-नडकी दोसब जोड १ परिवार आ तेसब
जोड १ गाम-समाज ।

मोहननार- हँ से तँ रँस कहनिई काका, जोड १ तँ तीनूक हेते झदा खरैँ तँ
नोक हुदी भ२ गेर । रिखाक पछाति चतुर्थीसँ पहिने दूवागमे भ२
जाग छै । कियो केतो कियो केतो जा क२ बहए नगैए तेते समाज
आ परिवार पडएने जेते ।

सिहेश्वर- से तँ ने पडएने जेते, झदा खँथि मुनि किछ कगयो नेरँ नीक ने
हेते ।

सोनेनार- गप-सपुप रँक गेर ।



- सिंहेश्वर- रँहकर कहाँ, भूमिका रँहएन । खही कछ जे खहाँ गामकेँ स्वति उठि
भोरे-भोव कियो नाँ नै नगए, से किखए ?
- सोनेनार- अ कहिया कतएसँ लोक कहए झुदा खरँ समाज खगु रँहन । अ नहिष्ठा
रात जे कोनो समाज नडकी डकठब नडकी रँहनीक आ नडकी पायनठ
पैदा केनक । तँ खरँ ओग नजबिख देखए पडत ।
- सिंहेश्वर- एक खरँमे उचित खडि । झुदा एक जमीन्दार परिवारक डकठब आ
दोसब साधारण (खेत रँहि पठनिहार डकठब) परिवारक रँच ने कूठमैती
भ२ बहन खडि ।
- सोनेनार- हँ, से तँ भगए बहन खडि । ओना जँ दनु समाजक परिचए भ२ जाए तँ
नाभे-नाभ हएत ।
- मोहननार- पहिने कयागत दिससँ हूखए ?
- मकशुदन- पहिने जैठाम खएन छी से ने उचित हएत । घबक मागने ने रातक
मागन ।
- कपनार- सब रातमे जोड़ने केने ओहिना होग छै जहिना गाड़ि आकि हबमे
एकठि खसखिब रँडद बहन आ एकठि कूडकाह । एहेन जोड़िसँ काज
चरते । कूडमेक रात मानि नहन ।
- मोहननार- काका, हम सब छोट १-मावडा छी गामक तबी-घरि ने रँहने छी, खहाँ
तँ परिवारे ने समाजमे श्रेष्ठ छी, नीक हएत जे खपन परिचए
दियो ।
- सिंहेश्वर- खपन परिचए कि दियो, कोनो नुकाएन परिवार खडि । रँसी दूब तँ ने
जाएरँ, ओना पाँच पीढ़ि आ सात पीढ़ि क मिनान तँ कूडमैतीमे हेरैक
चाही ।
- रौदी- कूडम नारायण, कहनिषँ रँडरँटा यँ झुदा एहनो समाज खडि जेकब रँही-
खतियान ने छै आ एहनो खडि जेकब छै । एहेन स्थितीमे सतो नुठ
आ नुठो सत हेते कि ने ?
- सिंहेश्वर- होगक संभारना छै, झुदा गावँरी ने छै । भओ सकै छै नहियोँ भ२
सकै छै ।



- सोनेनार- हेब रात रँकि गेल । रुईम नावायण जे मन फुरैए जेते मन फुरैए रँजेत जाउ । कियो अपन अपकई नाँसँ परिचए दग छथि तँ कियो संझक संग सरनाम, रिशेषण गलादीक संग, झुदा छी परिचाए ।
- सिंहेश्वर- हमब आठम पीढ़ी जमींदारी कानि ई गाम ईना । धर्मियो लोक बहथि धर्मसँ रँसी सिनेह बहनि । तगसँ परिवार उठिते गेल । पाँचम पीढ़ी खरैत-खरैत एगावह गामक जमींदार भेल ।
- मोहननार- काका, तेहेन क२ चासर धड़ानियनि जे दुओ कर्छा समावन हएत कि नै । ओते नै कहियो नडका, परिवार आ समाजक रिषयमे खखुनका रात रँजियो ।
- सिंहेश्वर- देखहक मोहन, भनहिं हिनको रँषी रएह रिद्ययानयमे पढ़नकनि जे हमरो रँषी पढ़नक । झुदा खबर्चे आ रँरस्थो एक बंग थोडे बहन । हमबा कि कोनो सेहन्ना खडि जे रँषी नोकरीए कबए । झुदा... ।
- मोहननार- झुदा का ?
- सिंहेश्वर- हिनकब रँषी कोनो कि डाकईवी कबती । बानी रँनि हाडस रागफ बहती ।
- मोहननार- काका, आरँ अपन रात रिमर्जन करू । झुबकई गप सुठि छी, दनु गोष्टे जरारँ दिख । खनेरे केतो नै खाँच रँस जेते । रुईम नावायण, खपने किड कहियो ?
- सोनेनार- जीयाभाय, जे जने छी से रँजू । थोड़-थाव हमरो रँमन खडि पडति जोड़ा देरै ।
- जीयानार- सोनेभाय, खडूकेँ रँमन खडि जे हमब रँरा दोखतवीपब छथि । तँ कोन गामक परिचए दियनि ।
- मोहननार- खखनि जग गाममे छी तेकब परिचए दियो । गामक कोनो ठेकान नै खडि, नगने प्रब सँ प्रवा भ२ जागए आ रहाने-भने गमा, ठेनिया रँनि जागए । तँ छोड़ू, ओग नमेनकेँ ।



सिंहेश्वर- तोह्र तँ रैष्टे-भातीज भेनह मोहन, जेहने माँग बहत तेहने ने हाथी जकाँ ठरँगव बगो छजत, से तँ रिचाव करै पड़तह किने ?

जीयानार- जहाँ धरि सकड़ता हएत तहाँ धरि सर्ग पुवरँ ने तँ अछि अपन रौंठ पड़रँ हमरोने दुनियाँ छे ।

सिंहेश्वर- ज़ा तँ मानै छहक किने मोहन जे जेकबा घवाड़ ीओ ने छे सेहो पाँच नाथक रिंथाह करैए तओमे हमबा सन लोककेँ केहेन हेरौक चाही ?

मकशुदन- एना माँपि-तोपि रँजना सँ ने हएत । रुईमेती केना हएत ज़ा जोगाड़ सभ मिनि नगाड़ । जखने कियो किछ किओ किछ षीपरै तखने काज भंगठत ।

सिंहेश्वर- एकरैव रौंजि दग छी जे पचीसनाथ कपेया कन्यागत खर्च कवथि रुईमेती हेरै कवतनि ।
(पचीस नाथ, सुनि गुमा-गुमी पसरि गेल । सभ सरँहक झूह, आँथि उठा-उठा देखरौ करैत आ गड़ । करैत । जीयानारक आँथि साँनक मेघ जकाँ भवि जाग छन्हि । झूड़ ी गौतने चद्दबसँ आँथि पोछे छथि । झूदा मकशुदन आ रौंदीक आँथि नार होगत ।)

मकशुदन- जीयाकाका, अपन अंतिम रिचाव रौंजि दियो, पछाति रूँमन जेते ।

जीयानार- रौंखा मकशुदन, कोनो रँड पुवान रौत नहियेँ छी । चाबि-पाँच रँथ पहरका छी । पनबह रौंया अपना खेत छेलै साठे सत-सत रौंया दूनु भाए-रँहिनक भेलै । देखते छहक जे रैष्टी केहेन पढैमे तेज थछि ।

मकशुदन- ईमे के दुसत ।

जीयानार- अपनो मन मानि गेल जे रैष्टी किछ कवत । अपा सम्पतिक रौंजी नगा देरौं, रैचि क२ पठ । देनिई ।

सोनेनार- पंचरेदीमे गाए ने थाएरँ । आहाँ जे कह छिई ओ भवि छाती गंगामे पैसि रँजनासँ हूँए रा गीता-बमायण उठौनासँ हूँए । सोनेनारी सत रँजनौं हेन । रुईम नावायण अथनि धरि जे जीयाभाय रैष्टीक प्रति उतसबजन केरनि ओ तँ अरौंक हएत, तथनि किछ रिचाव कवयो ?



- मोहननारन- कर्दूम नावायण, गंगा-कोसीक जखनि राठ्ठा खरै छै तखनि कोन घब
खसौत आ कोन गाम देने कर्ठनिया क२ धाव रनौत, तेकब कोनो
ठैकान छै ।
- सोनेनारन- हँ, से तँ नहियेँ छै, झुदा... ?
- मोहननारन- खही छ्वातीपव हाथ बथि रोजू जे सिहेश्रिवकाका जे रँजना, एहेन
रँजनिहार यएह ठाँ छथि आकि खानो-खानो गाम-समाजमे खड्डि ।
- सिहेश्रिव- पुराबि गामरँना पनबहनाथ ठाँका, गाड़ ी सोना सभ किछ दगने खाएने
छना, नडकी डाकठरी नै पठन छैननि तँए कर्दुमेती नै भेन ।
- मोहननारन- हँ, से तँ नडकेक माँग छन्हि ।
- सिहेश्रिव- किछ भेन तँ पठन-निखन जरान रँषे भेन किने जे झँहछोहनि केनक,
से जँ पुर्ति नै कवरै से केहेन हएत ? (कपनारन दिस अशोवा करैत)
- कपनारन- भाय सहिरँ, हम सभ रँवपष्क छी, खड्डू रातक मान नै हएत, से थोड़-
थाड़ हेरै कबत झुदा सिहेश्रिवकाकाक रिचाव तँ सरँमान्य हेरैक चाही ।
- जीयानारन- (देह खबखबागत) खपने अँठाम नुकाएने खाएन छेलौं जँ नुकाएक जगह
नै देरँ तँ चलिअ जाएरँ, झुदा हमझँ नुठ नै कहलौं ।) (ठरँठराएन आँथि
चदबिसँ पोछए नगना ।)
(मकशुदन उठि क२ ठाठ होअए । तअ पाछु रौदी सोनेनारन सेहो उठि
क२ ठाठ होअ छथि । जहिना मकशुदन तहिना रौदी सिहेश्रिवपव आँथि
गड़ १ मने-मन ग्मरँत । दोसब दिस कपनारन, मोहननारन, सोहननारन
सेहो उठि क२ ठाठ भेन । तीनु गोष्टे कखनो सिहेश्रिव दिस तकेत तँ
कखनो जीयानारन दिस ।)
- सोहननारन- (फडकि क२) अँग होँ, डाँडमे दम नै छैनह तँ रँषे किअ
जनमेनह ?
- मकशुदन- (रौति समष्टैत) डाँडमे दम नै छै । तैवा समाजकेँ डाँडमे दम नै
छह, जे दिन-देखाव रँषे हनार होअत बँह छह आ सभ झँह तके
छह ।



कपतान- (पीहकाबी मारैत) रूँडि कही क२, रँड समाजरँना भेना हेल । रँजह तँ गाममे केतेक हाथी आ घोड़ १ छह । रँड हेतह तँ कौन्जोता रँडद आ रौमनडुँगा घोड़ १, तहीपव समाजरँना रँने छह । (रौदी छुडपि क२ आगु रँठ-ए म्दा सोनेतार पकडि तग छै ।)

सोनेतार- रौआ रौदी, एना रिगडह नै । कियो अपन मरिस कृन्डिबि सँ नाथत तँ नाथह, म्दा जग समाजमे रिचाव नै छै तेकव हम-तँ कि कवरै । (कपतार सोनेतारक गङ्गा पकडि)

कपतार- रँड उचितरजा भेना अछि । रँप-माएक ठेकाने ने छुनहि आ प्ररचन म्दा छथि ।

सोनेतार- अथनि दवरँज्जापव छी, गावि पढ़ १, मारी अपन मान-प्रतिष्ठा नेत कवरँ । असकव छी जे मन फुडए सभ क२ निथ ।

मकशुदन- (सोनेतारक हाथ पकड-त) काका चनु । सभ अपन-अपन समाजक मानिक होए । समाजक सभ माए-रँहिनकेँ कहरँ जे अछुगिनी कहौनिहावि रा जीरन-सर्गानी कहनिहाविक प्रति जे जोब-जूबम भ२ बहल अछि ओकव बकडा अपने नै कवरँ तँ प्रकथ सभ दिन अरहेतना करैत आएत आ सभ दिन करैत बहत ।)

सोनेतार- म्दह कि तकेँ छह मोहन, दु हाथ चए दहक ।

मकशुदन- जँ केकरो माए दूध पीएने हेते तँ हमरो सभकेँ पानि नै पीएतक फुडि छैनग जेरँह ।

सिंहेश्वर- छोड़, अनेरे अहाँ सभ रातक रँतंगव करै छी । अछुने दुनियाँ खानी छै, हमरो ने छै । जखने ब्रँला गढ़ छथिन तखने जोड़ १क (जीरन सर्गिक) नामकवण सेहो क२ दग छथिन । जँ एक प्रकथ तँ दोसव नारीए नै छी । अही दूनुक रँच ने मैत्री होए छै जे जीरन सर्गिक कपमे चनेत जिनगीक नगयारकेँ ईपव-सँ-ओपव पाव करै छै ।

मकशुदन- सभ नुठ, सभ रँकरँस । जेहेन समाज तेहेन रिचाव ।

पठाक्रेप



•



तेसब दृष्ट-

(सोनेनारक दवरँज्जा । चौकीपव रैस देरौनमे गुंठाँ खाँथि रँन केने सोनेनार ।)

मकशुदन- काका, काका, एना किअए कसमेमे सुते छी ?
(मकशुदनक अराज सुनि बुधनी अंगने सँ रँजेत)

बुधनी- के छी यौ, के छी यौ । (रँजरौ करैत आ दवरँज्जापव एरौ करैत ।)

सोनेनार- रौखा मकशुदन, आरँह-आरँह ।

मकशुदन- रँड भरुआएन बुमि पडँ छी ।

सोनेनार- भरुआएन कहाँ छी । किछ रँत जिनगीक मन पडँ गेन सएह बुकौव नगैए जे की चँह छेलौं आ की भँ बहन अछि ।

बुधनी- जिनगी भवि तँ डकन-रँकनमे नागर बहनौं आ आरँ बुठ ाड ीमे सुमावक होगए ।

सोनेनार- अहाँ रँतक मिसिओ भवि दुख नै होगए, अपनो बुमि पडँए जे ठीके डकने-रँकने केलौं । पेठक खातीव की नै केलौं । समाजसँ शीसन धवि, जेतए गड नागर तेतए किछ पारँए चाहलौं ।

मकशुदन- आरँ की उपाए हएत ?

सोनेनार- की कहरँह । एते दिन ठीके बुने छेलौं जे समाज रँनि रँजे छी म्दा एहेन रँगड ान समाज रँगडि जाएत, से कहियो मनमे उठँनो नै छैनए ।

मकशुदन- गावजन तुना छी, रँकतीगतो कपे तँ किछ रिचाव देरँ किने ।

सोनेनार- रिचाव देरँसँ नीक रिचाव कवरँ हएत । (पनी सँ) कनी दु-घेँष्ट चाह पीखा दगतौं तँ कँठ सडँ ास भँ जाएत ।

बुधनी- चाह तँ रँनिते छन । ओगह छेडि कँ नै आएन छेलौं ।



- सोनेनार- नेने खाड ।
(बूधनी जागत खडि)
रौखा, समाजमे जखनि डाकूब सन नडकीक एहेन गति भ२ बहन खडि
तखनि कम पठन-निखन रा ने पठन-निखनक कि गति रहत ?
- मकशुदन- यहह ने बूने छी काका ? कम पठन-निखन रा ने पठन-निखनक तँ
समस्या खडिह मूदा एते भावी ने खडि ।
- सोनेनार- हमबा तोबा बूते बोकन रहत ?
(बूधनी चाह नेने खरैत खडि । तीनु गोष्टे हाथमे चाह)
- सोनेनार- शुगमक माए, जिनगीमे एते दूख कहियो ने भेल जेते खार होएए ।
पबसु जे घष्टकैतीमे गेलौं खा जे दशा भेल, से अपने जने छी ।
ईसँ नीक मोगति ।
- बूधनी- खार ई बूठ ाड मी कएन की रहत । जखनि करैरना उमेव छेनए
तखनि कवरै ने केनौं खा खार... ?
- सोनेनार- छातीपव हाथ बथि रजे छी जे बूमरै ने केनौं । कोन राँट कि भ२
जाग छै से कहाँ बूने छी ।
- बूधनी- एकठ्ठा काज कर, मनक सभ मोगति मेष्ठा जाएत ।
- सोनेनार- (जिज्ञासासँ) की ?
- बूधनी- समाजके कहि दियन जे भाए-रहिन, हमबासँ जे भूत-चूक भेल तेकरा
खहाँ लोकनि माफ क२ दिख ।
- सोनेनार- तग सँ भ२ जाएत ?
- बूधनी- भ२ केना जाएत, पैदना बूधपव खाडि पडि जाएत । खागु जे किछ
कवरै से समाजक बाय-रिचार सँ कवरै । समाजक शिष्टि समाजे हाथ
खडि ।
- सोनेनार- गमैया काज गाममे रहत, मूदा रिखाह तँ खाने समाजमे रहत ?



बुधनी- जहिना ई समाजमे रैषी-रैषी छै तहिना ओह समाजमे ने छै । एक समाजक नीक दोसरबाने ने नीक हएत । खाकि दोसरबाने खपना हएत ।

सोनेनार- से तू ने हएत ।

बुधनी- तखनि ?

सोनेनार- मकशुदन, खखनि तक जे किछ नीक-रैजाए केलौं से सभ नुठ । नीको खा खपना भूत रनि माष्टमे गडी गेल, झुदा... ।

मकशुदन- झुदा की ?

सोनेनार- यह ने, जे कहरैह ने । कहने ग होग छै जे काका कहरनि, ओहिना थोड़े कहने हेता, तगसँ की हेतह जे तू गुंगठि जेरैह खा हमहूँ, हुमदाव जकाँ कहैत बहरैह ।

मकशुदन- काका, किछ भेरिष तू खनाँ श्रेष भेरिष किले । जहिना नमहब जिनगी रीतर तहिना ने खामक खाँठी जकाँ बुधियो-रिचाव सकताएन ।

सोनेनार- तू खपन भाव केके छह रौखा । खपन मन हावि मनि गेल जे खखनि धबिक जिनगीक पानिमे चलि गेल । तगसँ नीक बुमि पडैए जे तू खखनि कानेजे छोड़रह खडि । तौबामे हमबा जकाँ खपना वृत्ति रैसी ने पैसेरह । तू रैसी क२ सकै छह । (रौदीक आगमन ।)

रौदी- काका, किख समाद पठेने छेलौं । रैजाव जागक रिचाव केने छी । कोनो तेहेन गुंगताग खडि ?

सोनेनार- रौखा गुंगताग खडियो खा नहियौं खडि ।

रौदी- से की ?

सोनेनार- पचास-पचपनक उमेव भ२ गेल हएत । झुदा... ।

मकशुदन- तगसँ रैसी भेल हएत ?



- सोनेनार- ओना नीक जकाँ ठेकान नै खडि, झुदा तगसँ कमे भेन हएत जे रैसी नै ।
- मकशुदन- से केना बूने छिई । देखे छी नीचता दाँतो सँपडू, जकाँ हिल्लए माथक केशो सिनेरै-चबक भ२ गेन आ साँठि नै ठपन हएँ ?
- सोनेनार- हो, तेते नै कोष्ट-कचहबीक डडो-फडो खेने छी नै जे खड्डेते उमेव देह आ गेन । देखे नै छहक तौना जकाँ पेष्ट भ२ गेन खडि ।
- रौदी- काका, हम गुगतएन छी ?
- सोनेनार- हँ, तँ कह छेनिख जे खपन पैछना जिनगी दिस तके छी तँ बूमि पड'ए जे ओहिना चरि गेन । आगु जे रँचन खडि तेकवा चाहे छी जे काजमे नगारी ।
- रौदी- ईमे के नै कहत ?
- बुधनी- (झुझा दैत) खनी सन-सन लोक नै बूझ रेखा तपस्विनी होग छथि ।
- मकशुदन- काका, खहाँ खपना गुवदा द२ दिख, देखा दग छी जे केना होग छै ।
- सोनेनार- हो, गुवदा के देनके हन जे हम देरह । ओहिना लोक कह छै । हँ, खपन रिचाव, खपन गछा, खपन संकल्प द२ सकै छिख ।
- बुधनी- खहाँ सन-सन प्रकथक जेहने रिचाव तेहने संकल्प । कौखा जकाँ भविओ बातिमे तीन रैव रिचाव रँदने छी ।
- रौदी- काका, जखनि खहाँक मनमे एहन रिचाव आएत तँ सब तबहँ पीठप बहरँ । पबसुए, खनी दुखारे गम खेनौं नै तँ देखा दैतिई जे ककरो माए दुष पिण्डके तँ हमरो पानि नै पीएनक ।
- सोनेनार- कियो खपन दुखार-दवरँज्जाक मान-प्रतिष्ठा खपने रँनरँए । एक दवरँजा ओहन होगए जेठामसँ लोक हँसि क२ जागए आ दोसव ओहनो होगए जेठाम लोक कानि क२ जागए ।



रौदी- काका, कहनिर्ष रैसरात । झुदा जहिना दुनियाँमे ढेरौ सरात छिडा याएत
खुडि तहिना ने ओकब जरारौ छिडा याएत छै ।

सोनेनार- हँ, से तँ छै ।

रौदी- जहिना खहाँ बुँने छी जे कियो अपना दवरँज्जापव जँ दोसवारकें गाबि
पढ' छै आकि मारवै करै तँ अपन गमरैए ने कि मारि खेनिहाबक किछ
जाग छै, तहिना तँ... ।

मकशुदन- हँ काका, जँ कनी-मनी गाबि आकि मारि खेने बहन तँ देह न्नाडा
नेत झुदा जँ मोगति आकि अधमोगति क२ क२ मारै तँ के मवत ?

सोनेनार- (ग्रम भ२ झुड'ी डोररैत) हँ, से तँ ठीके कह छह ? झुदा... ।

रौदी- झुदा की । यएह ने जे मारि-मारि कवत तँ खान गामक गनर लोक
गामक खनगिनत लोकक आगु हकीका पडा जाएत, झुदा बशुमि छिर्ष ।

सोनेनार- की बशुमि ?

रौदी- काका, बशुमे मरै दोख ने नागे, ओहिना ने ने महबागमे लोक गरै
छै ।

मकशुदन- काका, दनु गोष्टे कोन रतकशौरिमे नागि गेलौ । आगु-पीरैक रैव
भेन जागए । जन्दी रिसवजन कक ।

सोनेनार- रौखा, होगए जे आरँ जेते उँवदा खुडि आ जेते काज कवरँ, से
आगए कि खथने करैने मन तन-हन करैए । तँ ने किछ तँ कि कवरँ
से तँ कम-सँ-कम रिचावि नैरँ ।

रौदी- (झुड'ी डोररैत) रैस कहनिर्ष काका । झुदा काजक शुक कतएसँ कवरँ,
सएह तकरँ कठिन खुडि ।

सोनेनार- से की ?

रौदी- रौषी जकाँ सौसे एके बग खुडि । ओकब झँह केनए रँनेरै ।

बुँधनी- हाथसँ पकडा तौडा उठा झँहमे देरै तेते ने रौषीक झँह रँनत ।



सोनेनार- हौ, रँडु भावी ओमवी देखे छी । जहिना खड़ु आ जौवकेँ देखे छुहक । कখনो जौव रँडुना रँद ओमरेतह तँ कখনो पाके उघवि ओमवा जेतह, कখনो रँडेकान ओमवा जेतह तँ कখনो खेतक आछि एपव ओमवा जेतह ।

मकशुदन- तेकव बनो तँ ओकरे होग छै किने ?

रौदी- ओ पड़ु ओक वस्ता भेल । भने सोनेकाका कहनखिन जे सारेँ उपजेसँ न२ क२ जारेँ घबहठु नै क२ नैर, तारेँ तक ओमवागते बैह । म्हा ओकरे नाँपव घब रँनहरो कहन जाग छै किने ?

सोनेनार- तेतरेँ किख ? जौव तँ पछुआक सेहो होग छै । जहिँसँ गाछ जनमे छै तहिँसँ अपना पवपव ठाठ भ२ खसगरे रौद-रसात सहत पानिमे सड़ुत अपन वंग निखावि ओहन जौव रँने, जगसँ उपनेन-रिंखानक मड़ुँ ठाठन जाग ।

बुधनी- आरौ कनी होशि कक । नगने किछु-नगने किछु राजि दग छिँ ।

सोनेनार- कोनो मुठ रँजनी, जे खनकेँ तामस उठि गेल ?

बुधनी- केना नै तामस उठत । ठिकिया क२ एकेठा रात किख नै रँजनी । जखनि देखे छिँ जे एक बहिनो दनुक दु जिनगी छै, तखनि दनु किख रँजनिँ । कोनो एकेठाक नै तक केतो खरै छै ।

सोनेनार- नै बुननी, कनी म्हाँ खोनि क२ रँजियो ?

चमनी- हमवा कोनो नाज-पाक होग जे नै राजरँ । देखियो, उघडन जौव जकाँ समाजक लोक उघडा गेल खि । सबकेँ सबसँ मिनाने आ नगडु बै छै । तँ एक-एकेँ पकडा जोडा काजक माध्यमसँ समाज रँनत । रँह समाज रँठुत-रँठुत सामाजिक प्रतिष्ठा पारि फडत-फुनात । जे नानहिँ नै खि ।

सोनेनार- केना नै खि, नेनकेँ जँ पोररँ-पाररँ तँ कि ओ समए पारि पकष नै भ२ सकै । छोडु, आरँ किछु नै, मकशुदन जीयानारकेँ रँजारँह । सब



कियो छीहे । अखने रिचाबि लेरै जे आगु की करैक अछि । भने
पबसुका घटना ठैठके अछि । जीयानाकै रँजारह ।
(मकशुदन जागत अछि)

रौदी- हमरुँ अखनि रँजाव जेनाग छोड़ा दग छिई ।
(जीयाना आ मकशुदनक प्रवेशे)

सोनेना- संयोग शुभ बुमि पड़ैए । जेना बसुतेपव जीयाना ठाढ़ भेष्टि गेन
हुअ, तहिना नगले आरि गेनह ।

जीयाना- सोनेभाय, पबसुसँ जेना वाति क२ नीन नै होगए । भवि दिन भवि
वाति मन रौआगत वैहए जे रँषैकेँ खनेरे किअए पठलौं । जे रँच
क२ पठलौं तगसँ रिआहे क२ दैतिई । रौपक धवम तँ निमाहि
लैतौं ।

सोनेना- रँषै-रँषैक रिआह कवरँ माए-रौपक धवम भेर आ पठ एरँकेँ की
करँ ?
(जीयाना ग्म भेर । कखनो सोनेनाक चेहवा देखेत तँ नगले आरि
घुमा बुधनीक चेहवा देखेत । नगले फेव रौदीपव नजबि दैत, तँ
नगले रौहव दिस देखेत ।)

मकशुदन- काका, एना नँपने-तेपने काज नै चरत । दोहवा क२ ओहनठाम नै
जाएरँ, जेठाम मनुखक खबीद-रिँकबी होगए ।

सोनेना- मकशुदन रँजरह तँ नाथ कपेयाक, झुदा रिआह-पछति तँ दु समाजक
काज छी, एक समाजसँ केना रँनत ?

बुधनी- किअए नै रँनत ? जे रँषै जग समाजमे जनम लेनक कि ओग
समाजकेँ ओकव जीरन दान करैक शक्ति नै छै । एक समाज नै सभ
समाजक रीच रँषै-रँषै अछि । तँए सभकेँ वास्ता रँनरँए पड़तनि ।
सामाजिक रोग दहेज छी, जे देर निर्मित नै मनुष्य निर्मित छी ।

रौदी- जीयानाककाका अरुँ सोनहनी भाव नै उठा सकै छी । कावण जे महिनारँकेँ
खुद तैयाव हुअए पड़तनि । हम सभ सहयोगी हेरँनि ।



सोनैनात- जँ सभ कियो कहत तँ एकठाँ रात राजरै ?
(मकशुदन, रौदी, जीयानात समरेत सबमे)
राजू-राजू ।

सोनैनात- जीया भाय, खहाँ सुशीनाकेँ कहि दियो । रैथी जनमसँ त२ क२ पढ़ १-
लिखा क२ जूखान रँना देलिख । खपन, खपन परिवार, खपन समाजके
नाक-कान रँचरैत तँ स्रतंत्र जिनगी जीरैक हकदाव छह । खपन
कबह ।

पठाम्फेप

.



चाबिम दृश्य-

(जीयानानक दवरँज्जा । जीयानान रैसन । ककुमिणीक अरैत)

ककुमिणी- एना गोरब-गोगठा जकाँ रैसने काज चरत ।

जीयानान- से तँ नै चरत । झदा खनेरे पानियोँ डेगाएँ तँ काज नहियोँ ने छी ।

ककुमिणी- का पानि डेगाएँ ?

जीयानान- कोनो काज करैमे जखनि राँधा उपस्थित भइ जाग छै तखनि रिन राँधाकेँ भगौने काज थोड़ै हएत ।

ककुमिणी- से तँ नै हएत, झदा तँए कि लोक पबियास छोड़ा देत ।

जीयानान- से तँ नै छोड़त, झदा अगिनो पबियासक फन नीके हेते, तेकरो ठेकान तँ नहियोँ ने छै ।

ककुमिणी- से तँ नै छै, झदा सोनहरी नहियोँ छै एहनो तँ नहियोँ ने मानन जाएत । भगयो सकै छै ।

जीयानान- करेज खोनि कइ चाबिम दिनक राँत कह छी । ओना नैपने-तोपन कहने बही तँसँ भबिसक अछि नीक जकाँ सब राँत नहियोँ बुनारिष ।

ककुमिणी- यएह ने प्रकथक दोख कहियोँ आकि छन-कपठ कहियोँ जे स्त्रीगणकेँ अपन कएन काज झँह होड़ा नै कबता । ए दोख कि कोनो अहीठामे अछि आकि सब दिनेसँ होगत आएन अछि ।

जीयानान- कहनौँ रैसरौत, झदा सब राँत (काजक राँत) कहरो तँ नीक नहियोँ ने हएत । खैब जे होड । चाबिम दिन जे स्वशीलाक प्रतिअ रँबक भाँजमे गेन बही से कह छी ।

ककुमिणी- आग जे कह छी से चाबिम दिन एना पछाति किअए ने कहनौँ ।



जीयानान- किछु एहनो रात भेल जेकरा नहियेँ राजरें उचित बुझलौं। तँए नै कहलौं। झुदा खखनि बुझे छी जे राजरें उचित खडि तँए कह छी। खपना काजे समाज माबिष्टा नै खेतनि, रौकी कर्म तँ भागए गेलनि।

ककुमिणी- (जिह्वासार्स) से की। से की।

जीयानान- जखनि सुशीलाक रिखाहक खर्क रात उठल तँ रँवरँना (नडा काक पिता) पछीस लाख कपेखा खर्क करैक माँग बखनि।

ककुमिणी- खहाँ की उतव दिनिखनि ?

जीयानान- कहनिखनि एते सकवता नै खडि।

ककुमिणी- केहेन रँठा या तँ कहनिखनि तखनि...।

जीयानान- (फुडकि क२) एह, तखनि। पीहकारी-पव-पीहकारी पडए नगल। पीहकारीकेँ पीहकारी बुझि पहिने तँ किछु नै कियो रँजना झुदा पछाति जखनि गाबिक रौँछाव कानमे पडए नगल तखनि...।

ककुमिणी- ई सरँहक जडा काषा खडि रँष्टीकेँ पठ एरँ। खनेरे एते रँष्टीकेँ पठलौं। जेते पठे रौमे खबच भेल ओते जँ रिखाहेमे कबितौं तँ डाकूँव परिवार रँनि रँष्टी बहत।

जीयानान- हँ से तँ बहत। झुदा रँष्टी-रँष्टीमे की खन्तव छै। रौप-माएने जहिना रँष्टी तहिना रँष्टी।

ककुमिणी- रँहूत खन्तव छै। मनाही केने बहौं जे घब-परिवार चनरँक नुडा रँष्टीकेँ भ२ जाए, रँस भ२ गेल ओकव पठ १ग।

जीयानान- किखए ?

ककुमिणी- रँहूतो काषा खडि। झुदा सोमना-सोमना बुझु जे नावीकेँ प्रकथक सर्ग ई दुखारे नगौन जाग छै जे सन्तान पैदा होगसँ पहिनौं खा पछातिओ रोग-रियाधिक रौच पडा जागत खडि, तैठाम दोसबाक मदतिक



जकवति पढ़ा छै । तग संग देहोक एते शकतिक द्रास होग छै,
जगसँ दैनैदिक जे क्रिया-कराप छै से नै कइ परैए ।
(किशोबक प्रवेशे)

जीयानान- रौखा, सुकन किखए ने गेनह ?

किशोब- पढ़ा गेए ने होग छै तँ खनेरे की करब जाएँ ।

जीयानान- किखए ने पढ़ा गेए होग छै, शिक्षक सब नै छथि ?

किशोब- ने खरैक ठेकान छन्हि आ ने पढ़ाएक ।

जीयानान- सुकनक जखनि यएह गति छह तखनि घरापव तँ ओग हिसारक समए रँना
पढ़ाएह तखने ने पासो करबह आ दु खम्बक रौधो हेतह ।

किशोब- से तँ साम-भावे पढ़ा ते छी । चाबिदिन जे रहिनक रिखाहक
रिषयमे गेन बही से की भेन ?

जीयानान- रात-रौध बुँमि तोवा नै करहह से नीक नै बुँमि पढ़ाए । रहिन तँ
तोरे छिख । जिनगी भवि तोही सोममामे बहहहक । हम दुनु रैकती
तँ बुँह एन जाग छी । दिनो-दिन घट्टते जाएँ किने ।
(सुशीला खरैत खडि)

जीयानान- राँड, खरै केते दिन पढ़ा गे राँकी बहहह ?

ककुमी- खरै सुशीलाक रिखाहोक जोगाव करैक खडि ।

सुशीला- (उत्साहित होगत) माए, हमब चिन्ता छोड़ा दे ।

ककुमी- रैठि जाति छिख एना नै राजह ।

सुशीला- मँह रँन केने थोड़े हएत । चाबिदिनक सब राँत बुँमन खडि ।
जहिना जनकपुरमे सीता धनुष उठा एक सकल्प पैदा केरनि तहिना
दहेजक खिनाह हमहूँ अपन सकल्पसँ सकल्पित होग छी ।



जुीयानान- (खुशी होगत) रौड, अकरबेबाक रौत-रौपक खेत संकल्प ने होग छै । संकल्प करिण मेहनति आ साहस मंगै छै ।

सुशीला- जहिना दुनु प्राणी अहाँ हमबा पवाने ने जिनगी जीरैक प्रश सेहो देलौ तहिना अही सोनमहामे सर्तव जिनगी जीरैक प्रश सेहो नग छी । दुनियाँ किछ कहाँ, झुदा अहाँ महाप्रबन्धक काज कइ चुकर छी । हमरुँ किछ कवरौ ।

जुीयानान- रौड, अही आशि जेन ने एते केरौं । ने तँ आन रौपकेँ देखे छिई जे खेत कानेजे जे कपेखा गनि कइ बधि दगए ओ रौठेक रिमाबीमे ने खर्च कइ परैए, भनहि रैष्टी मबिअ किअए ने जाड । तेठाम हम अपन दुनु पवानीक हिस्सा काँटि रौचि चुका देलिअ । आरँ रौंकी की रँचेए जे... ।

सुशीला- आगए ने अदौसँ नाबीक प्रति अरहेनना होगत एलैए । प्रबन्ध प्रधान समाज नर-नर अरहेननाक रौंठि सिरैज-सिरैज अरहेनना करैत एलैए । जेकबा रौकेक जकबत छै ।

जुीयानान- हँ से तँ छै । झुदा अपन, पबिराव आ समाजोक प्रतिष्ठाकेँ अंगीकार करैत ने कियो किछ कबत ।

सुशीला- (हँसत) रौं, जहिना महान साधक जनक पन्ध्र तौडसेँ पहिने सीताक कौमार्य जीरन आ पाबिराबिक जीरनक संरन्धमे रिचावनि आकि ने रिचावनि, से तँ ओ जानथि, झुदा जहिना सास्रबमे कियो कनियाँसँ माए, माँसँ दादी होगत जिनगी गुदस करैए तँ कियो रैष्टी, रँहिन, दादी, दादी होगत सेहो ओते पहुँच जागत अछि तहिना... ।

ककुमिणी- रैष्टी, रैष्टी जातिक सीमासँ राहव ने हूअ । किछ भेनखून तँ जन्मदाता गुरु भेनखून । अथनि हम छिअ जे कहक छह से हमबा कहह । जँ हम ने बहितिअ तथनि तौबा झँह होडक अपिकाव छेनह ।

सुशीला- माए, जहिना समैक पबिरन्धन होग छै तहिना सभ कथुक होग छै । सभ कथुक भेने मन्थ ओगसँ अलग ने भइ सकैए । धर्मक (परिव्र जिनगी जीरैक मंत्र) जे कप बहन ओ अकाँठ छी झुदा किछ प्रवाण पडत तँ किछ नर अरैत, ओकरा तँ देखि-सुनि पबअए पडत ।



- ककुमिणी- हँ, से तँ पबख पड़त, झुदा समस्योकेँ पौखबिक जान जकाँ एकरेव नै फेकर जाएत । महजान जकाँ एक भागसँ नगरैत सौसे पौखबि पसावन जाग छै ।
- सुशीला- हँ पसावन जाग छै, तगमे सब माछ हँसिअ जाएत से कोनो जकबी तँ नै छै । जे टेंग जकाँ ओघवागत जाएत ओ हँसत आ जे जानक तीव खपनकेँ खरै नै दैत ओ तँ दुष्ठा बहरै कबत ।
- ककुमिणी- से तँ बहत, झुदा लोक-नाज तँ किछ छिई ।
- सुशीला- हँ छिई, झुदा लोक-नाज की, से तँ रिचाव पड़त । समाजमे देखे छी जे राँवह रँथक कन्या, जे रिंखारक पाँच दिन पछाति रैधर्य प्राप्त केरनि आ सए रँथक जिनगी रहिन, दीदी, दादीक रुपमे र्यतीत करै छथि । झुदा हुनका की कहरै । जे दोहरा क२ दोसर प्रकषक सर्गी नै भ२ सकैत, ओहन नाबी नेन समाज किखए चूप खडि ?
- ककुमिणी- चूपे कहाँ खडि । मनुख तँ खपना मनक मानिक होग छै ओ राँवह-डान्ह मानै छै । घोड १ जकाँ डान्हो बह छै तेयो चबि-चबि हाथ रुदै छै । झुदा तँ, तँ पढ़न-लिखन रैथी भेनह । तोवा तँ ए सब राँत रूँमए पड़तह ।
- सुशीला- हँ माए, रूँमए पड़त । झुदा... ।
- ककुमिणी- झुदा की ?
- सुशीला- माए, जाधबि रैथी माए-राँप ईठाम बहए ताधबि जे जिनगी छै ओ रिंखारक पछाति एकाएक रँदनि जाग छै । आ एतेसँ प्रकथक मनमानी शुक होग छै ।
- ककुमिणी- हँ से तँ होग छै । झुदा माएओ-राँपक किछ एहेन कर्तव्य खडि जेकरव सीमा रँनौर खडि । तही सीमाक तीव नै रैथीक रिंखार सेहो खडि ।
- सुशीला- हँ खडि । झुदा जिनगी रँदनेक सीमा जे रँनर खडि ओकरा सुधारिक खडि । खथनि किखए तोवा किखए हमव रिंखारक जहीन नगि गेन छै ।



ककुमिणी- रौड, नरकरेबिया छह, तँ उ गुगताग छह । तौही किछुए दिन पछाति डाकूठव रँनि नोकरी कवए जेरँह, खसगरे रौहव केना जेरँह । केकवा सँगे जेरँह ।

सुशीला- हम खथनि ने रिंखाह कवरँ खा ने नोकरी कवरँ । जग समाजक रँैणी छिई तग समाजकेँ रौप रूँनि सेरा कवरँ, हमवा सेराक रँहूत रँैसी जकवति समाजकेँ छै ।

ककुमिणी- रौड, हम तँ जन्मे देनिख, कर्म तँ खपने कवए पड़तह ।

सुशीला- (हँसत) अहाँ दूनु गोठेँ खसीवरद दिख जे जँ कोनो समाज दहेजक जान नगौनक तँ उग जानकेँ केना निष्काम रँनौन जाए ग तँ कवए पड़त ।

पठौअकेप

.

समाप्त

बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा): लेखक: उदय प्रकाश (मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे खन्नराद रिनित उपेन)

मोहनदास (मैथिली-देरनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलासुब)

मोहनदास (मैथिली-रँैत)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला सा द्वारा मैथिली खन्नराद

छिन्नमस्ता



३. कनकमणि दीक्षित (युव नेपालीसँ मैथिली खनुवाद श्रीमती कपा धीक आ श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता रैङ्क देशे-भ्रमण

४. तुकावाम वामा शैष्टिक कौकशी उपन्यासक मैथिली खनुवाद डॉ. शिशु कृमाव सिंह द्वारा पाखरो

रानानां धृते

रँचा लोकनि द्वारा स्वर्गीय ग्लोक

१. प्रातः कान ब्रह्महृत् (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने) सरप्रथम अपन दनु हाथ देखरौक चाही, आ ग्ल ग्लोक रँजराक चाही ।

कवाथे रसते नक्ष्माः कवमश्च सबस्रती ।

कवमुने स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नक्ष्मा रँसत छथि, कवक मध्यामे सबस्रती, कवक मुनमे ब्रह्मा स्थित छथि । भोवमे ताहि द्वारे कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२. संध्या कान दीप जेसरौक कान-

दीपमुने स्थितो ब्रह्मा दीपमश्च जनार्दनः ।

दीपाथे शिर्षवः प्राकतः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्याभागमे जनार्दन (रिष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शिर्षव स्थित छथि । हे संध्याज्याति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३. सुतरौक कान-

वामं स्कन्दं हनुमन्तं रैनतेर्यं वृकोदरम् ।

शियने यः स्मरेन्नितं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति ॥

जे सभ दिन सुतरासँ पहिने वाम, कृमावस्वामी, हनुमान्, गकड आऽ तीमक स्मरण करैत छथि, हुनकव दुःस्वप्न नश्य भऽ जागत छथि ।



४. नहरौक समय-

गर्ग च यद्गने चैर गोदारवि सबस्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निर्षि क्वक ॥

हे गर्गा, यद्गना, गोदारवी, सबस्रती, नर्मदा, सिङ्गु आऽ कारेवी धाव । एहि जनमे
थपन सान्निध्य दिथ ।

३. उतुव यसेद्गदस्य हिमाद्गश्चर दक्षिणम् ।

रर्ष तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्नुतिः ॥

सद्गदक उतुवमे आऽ हिमातयक दक्षिणमे भावत थद्धि आऽ उतुका सन्नुति भावती
कहरैत छथि ।

३. अहत्या द्रौपदी सीता तारा मल्दादवी तथा ।

पशुकं ना स्वरैर्निर्ण महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहत्या, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मल्दादवी, एहि पाँच साप्ती-स्त्रीक स्वरण
करैत छथि, हुनकव सभ पाप नश्रु भऽ जागत छथि ।

१. अश्विथोमा रैनिर्वासो हनुमाँश्च रिभीषणः ।

ध्रुपः पशुवामश्च सन्नुते चिबङ्गीरिनः ॥

अश्विथोमा, रैनि, वास, हनुमान्, रिभीषण, ध्रुपाचार्य आऽ पशुवाम- ग्रा सात ठाँ चिबङ्गीरी
कहरैत छथि ।

+ साते भरतु स्प्रतीता देरी शिखर रासिनी

उथेन तपसा नद्धा यथा पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः साश्व सतामसु प्रसादानुस्य धूर्जष्टैः

जाह्नरीफेननेथेर यन्नुपि शशिनः कना ॥

६. रानोऽहं जगदानन्द न मे राना सबस्रती ।

अपूर्णे पंचमे रर्षे र्णयामि जगत्त्रयम् ॥



१०. दूरस्थित मन्त्रेण यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

था ब्रह्मिण्यश्च प्रजापतिवृद्धिः । निर्भोकत्रा देवताः । सुवाङ्कृतिश्रुतः । षड्जः
सुवः ॥

था ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मरक्षी जायतामा वाष्ट्रे वाजुन्यः शुरेऽगमरातिरापी महावथो
जायता दोग्ध्री धेनुर्दोतान्द्रानाशुः सन्धिः पवन्निर्घोरा जिष्णु वथेष्ठाः सन्धेयो हाराशु
यजमानश्च रीरो जायता निकामे-निकामे नः पर्जन्या रश्मिन्तु फनरत्ना नः ०४धयः पचास्ता
योगेष्कमो नः' कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पुर्णाः सन्तु मनोवथाः । शिवाणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयसुत्र ।

ॐ दीर्घार्थिभिर । ॐ सौभाग्यरती भिर ।

हे भगवान् । अपन देशीमे सुयोगा था सर्तु रिद्यार्थी उपेन्न होथि, था शुकुर्के नाशि
कएनिहार सैनिक उपेन्न होथि । अपन देशीक गाय खुरे दुध दय रानी, रैवद भाव रहन
कवथेमे सम्मम होथि था षोड १ त्रुवित कर्पे दोगय रैना होथे । स्त्रीगण नगबक नेत्र
कवरौमे सम्मम होथि था हरक सभामे ओजपूर्ण भाषण देरैयरेना था नेत्र देरौमे
सम्मम होथि । अपन देशीमे जखन आरथक होय रश्मा होथे था ओषधिक-रुष्टी सर्दिदा
पविपक्क होगत बहथे । एरै एमे सभ तवहे हमवा सभक कन्या होथे । शिवाक
बुद्धिक नाशि होथे था मित्रक उदय होथे ॥

मन्त्रार्थके कोन रसुक गच्छा कवरौक चाही तकव रर्षिन एहि मन्त्रमे कएन गेन थुछि ।

एहिमे राचकब्रह्मपमानड् काव थुछि ।

थन्नय-

ब्रह्मन् - रिद्या आदि गणसँ पविपूर्ण ब्रह्म

वाष्ट्रे - देशीमे

ब्रह्मरक्षी-ब्रह्म रिद्याक तेजसँ हकत

था जायता- उपेन्न होथे

वाजुन्यः - वाजा



शुभे रीना डव रीना

अशर्या- रीश चलेरीमे निपुश

अतिर्यापी-शित्तुके तावण दय रीना

महावथो-पैघ वथ रीना रीव

दोअश्री-कामना(दुध पूर्ण कवण रीनी)

धेनुरीतानुडरानाशुः धेनु-गौ रा राशी रीतानुडरा- पैघ रीवद नाशुः -आशुः -रुवित

सन्तिः-घोड १

पुवश्रियेरी- पुवश्रि- रारहावके धावण कवण रीनी येरी-सुवी

जिष्ठु-शित्तुके जीतए रीना

वथेग्याः-वथ पव श्रिव

सुभेयो-उत्तम सभामे

हाराशु-हारा जेहन

यजमानशु-बाजाक बाजामे

रीरो-शित्तुके पवाजित कवणरीना

निकामे-निकामे-निश्चयहाकतु कार्यामे

नः-रुमव सभक

पुर्ज्या-मेघ

रुषतु-रुषा हेध

रुनरवा-उत्तम रुन रीना

उषधयः-उषधिः



पच्यन्ता- पाकए

योगेष्कमो-खनश्च नश्च करेरौक हेतु कएत गेन योगक वष्का

नः'-हमवा सभक हेतु

कप्पताम्-समर्थ हेतु

त्रिक्थिक खनुराद- हे त्रैल्लं, हमव बाज्यमे त्रैल्लं नीक धार्मिक रिद्या रँना, बाज्य-
रीव,तीवदाज, दुष दए रँनी गाय, दौगय रँना जन्तु, उद्यमी नावी होथि । पार्जन्य
आरश्चकता पडना पव रर्षा देथि, फन देय रँना गाढ पाकए, हम सभ सर्पति
अर्जित/सर्वम्कित कवी ।

रिदेह नूतन अंक भाषापक वचनानेखन-

अश्लिषीकोष-मैथिली- / मैथिलीकोष-अश्लिषी- प्रोजेक्टकेँ आगु रँद १६, अपन सुमार
आ योगदान ङ-मेन द्वावा ggajendr@videha.com पव पठाडु ।

१.भावत आ नेपाकक मैथिली भाषा-रैज्ञानिक लोकनि द्वावा रँनाओव मानक शैली आ
२.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाष्कम

१.नेपाव आ भावतक मैथिली भाषा-रैज्ञानिक लोकनि द्वावा रँनाओव मानक शैली

१.१. नेपाकक मैथिली भाषा रैज्ञानिक लोकनि द्वावा रँनाओव मानक उचावण आ लेखन
शैली

(भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक धावणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग तह निर्धारित)

मैथिलीमे उचावण तथा लेखन

१. पश्टमाष्कव आ खनुराव. पश्टमाष्कवानुशात ७, ए, ण, न एरँ म अरँत अछि । संस्कृत
भाषाक खनुराव शैलिक अन्तमे जाहि रश्चक अष्कव वँत अछि ओही रश्चक पश्टमाष्कव
अरँत अछि । जेना-

अरँ (क रश्चक वहरँक कावणे अन्तमे ७ आएत अछि ।)



पञ्च (च रश्चाक बहुरीक कावणो खलुमे एं आधन खड्डि ।)

खलु (छ रश्चाक बहुरीक कावणो खलुमे ण् आधन खड्डि ।)

सखि (त रश्चाक बहुरीक कावणो खलुमे न् आधन खड्डि ।)

खमु (प रश्चाक बहुरीक कावणो खलुमे म् आधन खड्डि ।)

उपह्राज रीत मैथिलीमे कम देखन जागत खड्डि । पञ्चमाक्षरक रैदनामे अपिकाशि जगहपव खनुस्त्रावक प्रयोग देखन जागड्ड । जेना- थक, पच, थड, सधि, थडि खदि । राकवारिद पलित गोरिन्द नाक कहरु छनि जे करश्चा, चरश्चा आ छरश्चासँ पूर्ण खनुस्त्राव निखन जाए तथा तरश्चा आ परश्चासँ पूर्ण पञ्चमाक्षरके निखन जाए । जेना- थक, चचन, थडा, खलु तथा कम्पन । झुदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रीतके नहि मानैत छथि । ओ लोकनि खलु आ कम्पनक जगहपव सेहो थत आ कपन निथैत देखन जागत छथि ।

नरीन पञ्चति किछु सुरिषाजनक खरथु छैक । किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रीचत होगत छैक । झुदा कतेक रैव हस्तलेखन रा झुदणामे खनुस्त्रावक छोट सन रीन्दु स्पष्ट, नहि बेनासँ अर्थक अनर्थ होगत सेहो देखन जागत खड्डि । खनुस्त्रावक प्रयोगमे उचावण-दोषक समुारना सेहो ततरैए देखन जागत खड्डि । एतदर्थ कसँ नरु करु परश्चा धवि पञ्चमाक्षरके प्रयोग कवरु उचित खड्डि । यसँ नरु करु छु धविक अक्षरक समु अखनुस्त्रावक प्रयोग कवरुमे कतहु कोनो रिराद नहि देखन जागड्ड ।

२. ठ आ ट : ठक उचावण “व् ह”जकाँ होगत खड्डि । खतः जतः “व् ह”क उचावण हो ओतः मात्र ठ निखन जाए । खान ठाम खानी ठ निखन जएरौक चाही । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडुआ, ठम्, ठेवी, ठाकनि, ठाठ खदि ।

ठ = पठ १ग, रठरु, गठरु, मठरु, बुठरु, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी खदि ।

उपह्राज शिछ, सभकेँ देखनासँ अ स्पष्ट होगत खड्डि जे साधावणतया शिछक शुकमे ठ आ मधा तथा खलुमे ठ अरैत खड्डि । गएह नियम ड आ डक सन्दर्भ सेहो नागु होगत खड्डि ।

३. र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उचावण रँ कएन जागत खड्डि, झुदा ओकवा रँ कपमे नहि निखन जएरौक चाही । जेना- उचावण : रैदनाथ, रिद्या, नरु, देरुता, रिछु, रशि, रन्दना खदि । एहि सभक स्थानपव क्रमशः रैदनाथ, रिद्या, नरु, देरुता, रिछु, रशि, रन्दना निखरौक चाही । सामान्यतया र उचावणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत खड्डि । जेना- ओकीन, ओजह खदि ।



४. य आ ज : कतहू-कतहू “य”क उचावण “ज”जकाँ करैत देखत जागत अछि, झुदा ओकवा ज नहि निखरौक चाही । उचावणमे यज, जदि, जझना, जुग, जारत, जोगी, जदू, जम आदि कहत जाएवना शिद्ध, सबकेँ क्रमशः यज, यदि, यझना, हाग, यारत, योगी, यदू, यम निखरौक चाही ।

३. ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दू निखत जागत अछि ।

प्राचीन रतनी- कएत, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतनी- कयत, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिद्धक शुकमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिद्ध, सबक स्थानपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे शिद्धक आवण्णामे “ए”केँ य कहि उचावण कएत जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पञ्चतिक अनुसवण कवरै उपहाज मानि एहि प्रसुकमे ओकरे प्रयोग कएत गेल अछि । कि एक ठू दूनुक लेखनमे कोनो सहजता आ दूकहतक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसापावणक उचावण-शीली यक अपेक्षा एस रैसी निकष्ट छैक । थाम क२ कएत, हएँ आदि कतिपय शिद्धकेँ केत, हँर आदि कपमे कतहू-कतहू निखत जाएँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणात करैत अछि ।

३. हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पवम्पवामे कोनो रीतपव रीत दैत कार शिद्धक पाछाँ हि, हू रगाओत जागत छैक । जेना- हुनकहि, अपनहू, ओकवहू, तकौतहि, छेष्टहि, आनहू आदि । झुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव एकाव एँर हूक स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखत जागत अछि । जेना- हुनके, अपनो, तकौने, छेष्ट, आनो आदि ।

१. ष तथा थ : मैथिली भाषामे अपिकाशितः षक उचावण थ होगत अछि । जेना- षडन्द (खडयन्द), थोडशी (थोडशी), षष्टकोष (थष्टकोष), रूषेशी (रूथेशी), सन्नाथ (सन्नाथ) आदि ।



+.प्रनि-ल्लोप : निम्नलिखित खरस्थामे शिद्धसँ प्रनि-ल्लोप भ२ जागत खडि:

(क) क्रियानुयी प्रत्य अयमे य रा ए वृष्ण भ२ जागत खडि । ओहिमे सँ पहिने अक उचावण दीर्य भ२ जागत खडि । ओकव आगाँ ल्लोप-सूचक चिह्न रा रिक्वारी (/ २) नगाओन जागड्ड । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) लेन, उठए (उठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क लेन, उठ पडतौक ।

पठ२ गेनाह, क२ लेन, उठ२ पडतौक ।

(ख) पूर्कालिक ध्रत आय (आए) प्रत्यमे य (ए) वृष्ण भ२ जागड्ड, झदा ल्लोप-सूचक रिक्वारी नहि नगाओन जागड्ड । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाय (ए) देरँ, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरँ, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य ओक उचावण क्रियापद, सङ्गा, ओ रिशेषण तीनुमे वृष्ण भ२ जागत खडि । जेना-

पूर्ण कप : दोसबि मातिनि चलि गेलि ।

अपूर्ण कप : दोसब मातिन चलि गेल ।

(घ) रतमान ध्रदन्तक अन्तिम त वृष्ण भ२ जागत खडि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत खडि, रँजैत खडि, गरैत खडि ।

अपूर्ण कप : पठै खडि, रँजै खडि, गरै खडि ।

(ङ) क्रियापदक अरसान ओक, उक, ईक तथा ठीकमे वृष्ण भ२ जागत खडि । जेना-

पूर्ण कप: डियोक, डियेक, डहीक, ड्ठीक, ड्ठेक, अरितेक, होगक ।

अपूर्ण कप : डियो, डिये, डही, ड्ठी, ड्ठे, अरिते, होग ।

(च) क्रियापदीय प्रत्य न्ह, ह् तथा ठकावक ल्लोप भ२ जागड्ड । जेना-

पूर्ण कप : डुन्हि, कहनुन्हि, कहनुँ, गेनुह, नहि ।

अपूर्ण कप : डुनि, कहनुनि, कहनुँ, गेनु२, नग, नधि, नै ।



९. **प्रति स्थानानुबन्ध** : कोनो-कोनो स्वर-प्रति खपना जगहसँ हटि क२ दोसब ठाम चलि जागत अछि । खास क२ द्रस्र ङ आ उक स्रस्रमे ङ रात नागु होगत अछि । मैथिलीकवण भ२ गेन शिछक मध रा खल्लुमे जँ द्रस्र ङ रा उ आरैँ उँ ओकव प्रति स्थानानुबित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- शिनि (शिगन), पानि (पागन), दानि (दागन), माष्टि (मागष्ट), काद्ध (काउद्ध), मास्र (माउस) आदि । ऋदा तसेम शिछ सभमे ङ निखम नागु नहि होगत अछि । जेना- बश्मिकेँ वगश्म आ स्रपाश्रुकेँ स्रपाउंस नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. **हनल्लु()क प्रयोग** : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनल्लु ()क आरथकता नहि होगत अछि । कावण जे शिछक खल्लुमे ख उचावण नहि होगत अछि । ऋदा संस्कृत भाषासँ जहिनक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिछ सभमे हनल्लु प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिछकेँ मैथिली भाषा स्रस्रि निखम अनुसाव हनल्लुरिहीन बाखन गेन अछि । ऋदा राकवण स्रस्रि प्रयोजनक लेन खल्लुरथक स्थानपव कतहु-कतहु हनल्लु देन गेन अछि । प्रसुत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ नरीन दुनु शैलीक सबन आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेष्ट क२ रर्ण-रिन्वास कएन गेन अछि । स्थान आ समयमे रँचतक स्रस्रि हनु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबन होरँरँना हिसारँसँ रर्ण-रिन्वास मिनाओन गेन अछि । रतमान समयमे मैथिली मात्रभाषी पर्यल्लुकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेरँ२ पडि बहन परिप्रेक्ष्यामे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन रिशेषता सभ कृषिंत नहि होगक, ताद्ध दिस लेखक-मल्लन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. वामरताव यादरक कहरँ छनि जे सबरताक अनुसन्धानमे एहन खरस्था किन्हु ने आरँ२ देरँक चाही जे भाषाक रिशेषता छँहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. वामरताव यादरक पावणाकेँ पूर्ण कपसँ स्रस्रि न२ निर्धारित)

१.२. मैथिली अकादमी, पठना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिछ मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रर्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रर्तनीमे लिखन जाय- उदाहरणार्थ-

ब्राह्म

एथन

ठाम

जकव, तकव

तनिकव



खडि

खग्राह

खखन, खखनि, एखेन, खखनी

ठिमा, ठिना, ठिमा

जेकब, तेकब

तिनकब । (रैकल्पिक कर्पे ग्राह)

ईड्ड, खहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप रैकल्पिकतया खपनाउत जाय: भ२ गेन, भ३ गेन रा भ४ गेन । जा बहन खडि, जाय बहन खडि, जाए बहन खडि । कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबय गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' प्रनिक स्थानमे 'न' लिखत जाय सकैत खडि यथा कहनि रा कहन्हि ।

४. 'ई' तथा 'उ' ततय लिखत जाय जत' सप्रुतः 'खग' तथा 'खड' सदृश उच्चारण गप्रु हो । यथा- देखेत, डलेक, रौखा, डोक गवादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिद्ध एहि कपे प्रहाङ्ग होयतः जैह, सैह, गएह, उईह, लैह तथा दैह ।

६. ह्रस्व अकारांत शिद्धमे 'ग' के रूप कवरि सामान्यतः खग्राह थिक । यथा- ग्राह देखि खरैह, मानिनि गेनि (मनुष्य मात्रमे) ।

७. स्रुतत्र द्रुम 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण खादिमे उँ यथारत बाखत जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक कर्पे 'ए' रा 'य' लिखत जाय । यथा:- कयन रा कएन, खयनाह रा खएनाह, जाय रा जाए गवादि ।

८. उच्चारणमे दु स्रुतत्र रीच जे 'य' प्रनि स्रुतः खारि जागत खडि तकरा लेखमे स्थान रैकल्पिक कर्पे देत जाय । यथा- पीखा, खटैखा, रिखाह, रा पीया, खटैया, रियाह ।

९. सान्नासिक स्रुतत्र स्रुतत्र स्थान यथासंभर 'ए' लिखत जाय रा सान्नासिक स्रुतत्र । यथा:- मैएण, कनिएण, किवतनिएण रा मैखाँ, कनिखाँ, किवतनिखाँ ।

१०. कारकक रिभक्तिभक्त निम्नलिखित रूप ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । 'मे' मे खनुस्राव सरखा बाज्ज थिक । 'क' क रैकल्पिक रूप 'केब' बाखत जा सकैत



थङ्गि ।

११. पूरुकराक कुरियापदक रौद कय रा कए अरय रैकल्पिक कए नगाउन जा सकैत थङ्गि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गलादि निखन जाय ।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क रँदना अन्रसार नहि निखन जाय, किंतु ङापक सुरिपार्थ अर्द्ध 'ङ', 'ए', तथा 'ण' क रँदना अन्रसारो निखन जा सकैत थङ्गि । यथा:- अर्द्ध, रा अर्क, अरुन रा अर्चन, कर्ठ रा कर्ठ ।

१४. हनंत चिह्न निखतः नगाउन जाय, किंतु रिभङ्गिक र्ग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सभ एकन कावक चिह्न शिछमे सँ क' निखन जाय, हँ क' नहि, सँहाङ्ग रिभङ्गिक हेतु कवाक निखन जाय, यथा कव पवक ।

१६. अन्रनासिकरै चन्द्ररिन्दू द्वावा रङ्ग कयन जाय । पर्वतु ङदणक सुरिपार्थ हि समान जर्ठन मात्रापव अन्रसारक प्रयोग चन्द्ररिन्दूक रँदना कयन जा सकैत थङ्गि । यथा- हि केव रँदना हि ।

१७. पूर्ण रिवाय पासिसँ (।) सूचित कयन जाय ।

१८. समस्त पद सँ क' निखन जाय, रा हाङ्गफेनसँ जोडि क' , हँ क' नहि ।

१९. निख तथा दिख शिछमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अर्क देरनागवी कपमे वाखन जाय ।

२१. किछु धुनिक लेव नरीन चिह्न रँनराउन जाय । जा ङ नहि रँनव थङ्गि तारंत एहि दू धुनिक रँदना पूरुवत् अय/ अय/ अय/ अय/ अय/ अय विखन जाय । आकि ए रा अँ सँ रङ्ग कएव जाय ।

ह./- गोरिन्द मा ११/०१/१३ श्रीकान्त ठाँरुव ११/०१/१३ सुरेन्द्र मा 'सुमन' ११/०१/१३

२. मैथिलीमे भाषा संपादन पाठ्यक्रम

२.१. उचारण निर्देशः (रौलेड कएव कप त्राय):-



दन्तु न क उचावामे दाँतमे जीह सँत- जेना राजू नाम , ऋदा ण क उचावामे जीह मुर्धामे सँत (ने सँतैए तँ उचावण दोष खँडि)- जेना राजू गणेशी । तानरा शिमे जीह तारसँ , षमे मुर्धसँ आ दन्तु समे दाँतसँ सँत । निशाँ, सभ आ शौषण राजि क२ देखु । मैथिलीमे ष केँ वैदिक संस्कृत जकाँ थ सेहो उचवित कएन जागत खँडि, जेना रर्षा, दोष । य खनेको स्थानपव ज जकाँ उचवित होगत खँडि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशी संजोग आ

गडसे उचवित होगत खँडि) । मैथिलीमे र क उचाव रँ शि क उचाव स आ य क उचाव ज सेहो होगत खँडि ।

ओहिना क्रम ७ रेशीकान मैथिलीमे पहिने राजन जागत खँडि कावण देरनागवीमे आ मिथिलासुबमे क्रम ७ अस्फुवक पहिने निखनो जागत आ राजनो जएरीक चारी । कावण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उचावण होगत खँडि (निखन तँ पहिने जागत खँडि ऋदा राजन रौदमे जागत खँडि), से शिक्षा पछतिक दोषक कावण तम सभ ओकर उचावण दोषपूर्ण टगसँ क२ बहन छी ।

खँडि- ख ग छ **खँड (उचावण)**

छथि- छ ग थ **छैथ (उचावण)**

पहँचि- प हँ ग च **पहँचि (उचावण)**

आरँ थ आ ग ज़ा ए ई ओ ँ अं अः ऋ ई सभ नेन मात्रा सेहो खँडि, ऋदा ईमे ग़ा ई ओ ँ अं अः ऋ केँ सहाज्जसुब कपमे गगत कपमे प्रहाज्ज आ उचवित कएन जागत खँडि । जेना ऋ केँ वी कपमे उचवित कवरँ । आ देखियौ- ई नेन देखिओ क प्रयोग अन्नचित । ऋदा देखिई नेन देखिये अन्नचित । कू सँ हू पवि थ सन्धित भेनासँ कू सँ हू रँनेत खँडि, ऋदा उचावण कान हननु हाज्ज शिद्धक अन्तक उचावणक प्रवृत्ति रँठन खँडि, ऋदा तम जखन मनोजमे ज् अन्तमे रँजेत छी, तखनो प्रबनका लोककेँ रँजेत स्वरँन्दि- मनोज२, रासुरमे ओ थ हाज्ज ज् = ज् रँजेत छथि ।

हेव त्र खँडि ज् आ ए० क सहाज्ज ऋदा गगत उचावण होगत खँडि- गा । ओहिना सु खँडि कू आ ष क सहाज्ज ऋदा उचावण होगत खँडि छ । हेव शि आ व क सहाज्ज खँडि श्रै (जेना श्रैमिक) आ स् आ व क सहाज्ज खँडि प्र (जेना मिप्र) । ए नेन त+व ।

उचावणक आँडियो फागत रिदेह आकाँगर <http://www.videha.co.in/> पव उपनद्ध खँडि । हेव केँ / सँ / पव पूर् अस्फुवसँ सँत क२ निखु ऋदा तँ / क२ सँत क२ । **ईमे सँ** मे पहिन सँत क२ निखु आ रौदरँना सँत क२ । अंकक रौद ठी निखु सँत क२ ऋदा अन्त ठी निखु सँत क२ जेना



**डुह्ठी ऋदा सभ ठी । हेव ७थ म सातम विभू- डुठम सातम ले । घवरवामे रववा
ऋदा घवरवामे रवी प्रहाङ्क कक ।**

बहए-

बह ऋदा सकैए (डुचावण सकै-ए) ।

ऋदा कखनो कान बहए आ बह मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कन्या जगहमे पार्किंग
कवरौक अत्रास बह ओकवा । प्रदुनापव पता नागत जे दुनदुन नाम्ना आ द्रागरव कनाई
झसक पार्किंगमे काज करैत बहए ।

डुले, डुनए मे सेहो ई तबहक भेन । डुनए क डुचावण डुन-ए सेहो ।

संयोगने- (डुचावण संजोगने)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गहमे ले कक , गहमे क२ सकै छी ।)

क (जेना वामक)

वामक आ संगे (डुचावण वाम के / वाम क२ सेहो)

सँ- स२ (डुचावण)

चन्द्ररिन्दू आ खनुस्राव- खनुस्रावमे कंठ धविक प्रयोग होगत अछि ऋदा चन्द्ररिन्दूमे
ले । चन्द्ररिन्दूमे कनेक एकावक सेहो डुचावण होगत अछि- जेना वामसँ- (डुचावण
वाम स२) वामकेँ- (डुचावण वाम क२/ वाम के सेहो) ।

कै जेना वामकेँ भेन हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकेँ

क जेना वामक भेन हिन्दीक का (वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गहमे) एके चाक शिष्ट सँहक प्रयोग अराद्धित ।

के दोसव अर्थे प्रहाङ्क भ२ सकैए- जेना, के कहक ? रिभञ्जि “क”क रँदना एकव
प्रयोग अराद्धित ।



नखि, नहि, नै, नग, नँग, नगँ, नगँ ई सभक उच्चारण खा लेखन - ले

ॐ क रँदनामे र्र जेना महर्रपूर्ण (महॐर्रपूर्ण नै) जतए अर्थ रँदनि जए ओतहि मात्र तीन अक्षरक सँगाँअक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स स्र ग त (सम्पति नै- काव सही उच्चारण आसानसँ समुद्र नै)। ऋदा सरोतिम (सरोतिम नै)।

बाष्ट्रिय (बाष्ट्रीय नै)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पोड्डेने/ पोड्डे नेन/ पोड्डए नेन

पोड्डेए/ पोड्डए/ (अर्थ परिवर्तन) पोड्डए/ पोड्डे

ओ लोकनि (लृग क२, ओ मे रिकारी नै)

ओग/ ओहि

ओहिने/

ओहि नेन/ ओही व२

जएरौं/ रैसरौं

पँचभज्या

देखियोक/ (देखिओक नै- तहिना अ मे जस्र खा दीर्घक मात्राक प्रयोग अनूचित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तैँ/

होएत / हएत

नखि/ नहि/ नँग/ नगँ/ नै

सौँसे/ सौँसे

रँड /

रँड (मोवाओव)

गाए (गाग नहि), ऋदा गागक दुष (गागक दुष नै।)

बहलौं/ पहिबतौं



ठमही/ थही

सरै - सभ

सरैलक - सभलक

धवि - तक

गप- रात

रूमरै - समयसरै

रूमलौ/ समयलौ/ रूमनहूँ - समयनहूँ

ठमवा थाव - ठम सभ

थाकि- था कि

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक थारथकता नै)

होथन/ होनि

जाथन (जानि नै, जेना देन जाथन) ऋदा जानि-रूमि (अर्थ पविर्तन)

पथर/ जाथर

थाड/ जाड/ थाड/ जाड

मे, कै, सँ, पव (शेछसँ सँ क२) तँ क२ थ२ द२ (शेछसँ छँ क२) ऋदा दूठा रा रैसी रिभञ्जि सर्ग बहनापव पहिन रिभञ्जि ठाकै सँठाड। जेना **एमे सँ** ।

एकठा , दूठा (ऋदा कए ठा)

रिंकावीक प्रयोग शेछक थनुमे, रीचमे थनारथक कर्पे नै। थाकावाबु था थनुमे थ क रौद रिंकावीक प्रयोग नै (जेना दिथ

, था/ दिय , था, था नै)

थपोद्धारक प्रयोग रिंकावीक रौदनामे कवरै थनुचित था मात्र हांनूक तकनीकी नूनताक पविचायक)- ओना रिंकावीक संकृत कप २ थरग्रह कहन जागत थछि था रतनी था उचावण दू ठाम एकव लोप बहत थछि/ बहि सकैत थछि (उचावामे लोप बहिते थछि)। ऋदा थपोद्धारक सेहो थंगेजामे पसेसिर केसमे होगत थछि था फ्रेचमे शेछमे जतए एकव प्रयोग होगत थछि जेना *raison d'etre* एतए सेहो एकव उचावण रैजोन डेष्टव होगत थछि, माने थपोद्धारक थरकाशी नै दैत थछि



रवन जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिक्काबीक रँदना देनाग तकनीकी कर्पे सेहो
अनुचित) ।

अगमे, एहिमे/ ईमे

जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

केँ (के नहि) मे (अनुयाव बहित)

भइ

मे

दइ

तँ (तइ, त नै)

सँ (सइ स नै)

गाछ तब

गाछ वग

साँस खन

जो (जो go, करै जो do)

ते/तअ जेना- ते दुखारे/ तगमे/ तगने

जे/जअ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगने

ई/अअ जेना- ई कावण/ ईसँ/ अगने/ रूदा एकव एकटा खास प्रयोग- नावति कतेक
दिनसँ कहत बहत अग

नै/वअ जेना नैसँ/ वगने/ नै दुखारे

नहँ/ नौ

गेनौ/ नेनौ/ नेवँह/ गेनहँ/ नेनहँ/ नेवँ

जअ/ जाहि/ जे



जहियाँ/ जाहियाँ/ जगियाँ/ जैयाँ

एहि/ अहि/

अग (राकक अतमे त्राघा / अँ

अगद्ध/ अद्धि/ अँद्ध

तअ/ तहि/ तै/ ताहि

ओहि/ ओअ

साथि/ साथ

जोरि/ जोरी/ जोरै

भलेही/ भवहि

तै/ तँग/ तँअ

जाअरै/ जअरै

नग/ नै

छग/ छै

नहि/ नै/ नग

गग/ गै

छनि/ छन्हि ...

समअ शेरूदक संग जखन कोनो रिभक्ति जूठै छै तखन समै जना समैपव
गत्यादि । असंगवमे छदअ आ रिभक्ति जूठने छदे जना छदेसँ, छदेमे गत्यादि ।

जअ/ जाहि/

जै

जहियाँ/ जाहियाँ/ जगियाँ/ जैयाँ

एहि/ अहि/ अग/ अँ

अगद्ध/ अद्धि/ अँद्ध



तग/ तहि/ ते/ ताहि

उहि/ उग

साथि/ साथ

जोरि/ जोरी/

जोर

भने/ भनेही/

भवहि

ते/ तग/ तग

जावर/ जवर

नग/ ने

छग/ छे

नहि/ ने/ नग

गग/

गे

छनि/ छन्हि

चकरन खडि/ गेव गछि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देत रिक्पमेसँ लैखण्ड एडीटिव द्वारा कान कप चूनत जेरौक चाही:

रौन्ड कएत कप त्राह:

१. होयरना/ होरयरना/ होमयरना/ हेररना, हेमरना/ होयरौक/होरयरना /होयरौक

२. खा/खा२

खा

३. क' नेने/क२ नेने/क३ नेने/क४ नेने/न/न२/न३/न४



४. 'भ' गेव/भ२ गेव/भय गेव/भ३

गेव

५. कव' गेवाह/कव२

गेवह/कव३ गेवाह/कव४ गेवाह

६.

विश्व/दिवि विश्व, दिव, विश्व, दिव, /

७. कव' रैवा/कव२ रैवा/ कव३ रैवा करैरैवा/क'व' रैवा /

करैरैवा

८. रैवा रवा (प्रकष), रानी (स्त्री) ९

आइव आग्र

१०. प्रायः प्रायह

११. दुःख दुख १

१२. चलि गेव चव गेव/चैन गेव

१३. देवखिन्ह देवकिन्ह, देवखिन

१४.

देखवहि देखवनि/ देखजेन्ह

१५. छविन्ह/ छवहि छविन/ छजेन/ छवनि

१६. चजेत/दैत चवति/दैति

१७. एखनो

अखनो

१८.

रैठनि रैठखन रैठहि



१९. ओ/ओ२(सरनाम) ओ

२०

२. ओ (संयोजक) ओ/ओ२

२१. कागि/काग्नि कागर्ग/कागु

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. केवहि/केवनि/कयवहि

२५. तखनत/ तखन त

२६. जा

बहव/जाय बहव/जाय बहव

२७. निकवय/निकवय

वागव/ वगव रँहवाय/ रँहवाय वागव/ वगव निकव/रँहवै वागव

२८. ओतय/ जतय जत/ ओत/ जतय/ ओतय

२९.

की बुबव जे कि बुबव जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यादि(मोन पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यादि (मोन)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हँसय/ हँसय हँस

३४. नौ खाकि दस/नौ किंरा दस/ नौ रा दस

३५. सास-ससुव सास-ससुव



३७. छह/ सात छ/छः/सात

३१.

की की/ कीह (दीर्घिकावाप्तये २ रजित)

३४. जरौरै जरौरै

३९. कबयताह/ करेताह कबयताह

४०. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिस

४९

. गेवाह गधवाह/गयवाह

४२. किछ खाव/ किछ ँव/ किछ आव

४३. जाग छव/ जागत छव जाति छव/जैत छव

४४. पडूँच/ भेट जागत छव/ भेट जाग छव पडूँच/ भेट जागत छव

४३.

जरौन (हरा)/ जरान(हैजी)

४७. वय/ वय क/ कय/ वय कय / वय कय/ वय कय

४१. व/वय कय/

कय

४४. एयन / एयने / अयन / अयने

४९.

अयकेँ अयकेँ

३०. गहीव गहीव

३९.

धाव पाव केनाय धाव पाव केनाय/केनाय

३२. जेकाँ जेकाँ/

जकाँ



ॐ ३. **तहिना तेहिना**

ॐ ४. **एकव थकव**

ॐ ५. **रहिनउ रहनोअ**

ॐ ६. **रहिन रहिनि**

ॐ ७. **रहिन-रहिनोअ**

रहिन-रहनउ

ॐ ८. **नहि/ ले**

ॐ ९. **कवरौ / कवरौय/ कवरौअ**

ॐ १०. **तँ/ त २ तय/तअ**

ॐ ११. **तेयारी मे छेठ-भाअ/ते, जेठ-भाय/भाअ**

ॐ १२. **गिनतीमे दु भाअ/भाअ/भाँअ**

ॐ १३. **अ पोथी दु भाअक/ भाँअ/ भाअ/ लेन । यारत जारत**

ॐ १४. **माय मे / माअ ऋदा माअक मयता**

ॐ १५. **देहि/ दअन दनि/ दअहि/ दयहि दहि/ दैहि**

ॐ १६. **द/ द२/ दअ**

ॐ १७. **उ (सँयोजक) उ२ (सरनाम)**

ॐ १८. **तका कअ तकाय तकाअ**

ॐ १९. **पैरे (on foot) पअरे कअक/ कैक**

१०.

ताहमे/ ताहमे

११.

प्रतीक

१२.

रँजा कय/ कअ / क२



ISSN 2229-547X VIDEHA

१३. रैननाय/रैननाथ

१४. केवा

१३.

दिनका दिनका

१७.

ततहिँ

११. गवरौवहिँ/ गवरौवनि

गवरैवहिँ/ गवरैवनि

११. राव राव

१७.

चेनू चिन्हा (अशुभ)

+०. जे जे

+९

. से/ के से/के

+२. एखुनका अखनुका

+३. भूमिनाव भूमिनाव

+४. सुगव

/ सुगवक/ सुगव

+३. सठहाक सठहाक +७.

डुरि

+१. कवगयो/उ करैयो ले देवक /कबियो-कवगयो

+१. पुरावि

पुराव

+७. सगड १-साँप



सगड १-साँठि

९०. पधरे-पधरे पैरे-पैरे

९१. खेवधरौक

९२. खेलेरौक

९३. वगा

९४. होध- हो होध

९५. बूमव बूमव

९६.

बूमव (संबोधन अर्थमे)

९७. येह यधह / अधह/ सैह/ सधह

९८. तातिव

९९. अयनाय- अयनाग/ अयनाग/ एनाग

१००. निन्न- निन्द

१०१.

रिन्न रिन्न

१०२. जाध जाध

१०३.

जाध (in different sense)-last word of sentence

१०४. छत पव आरि जाध

१०५.

ले

१०६. खेवाध (play) खेवाध

१०७. शिकाधत- शिकायत

१०८.



ठप- ठप

१०९

पठ- पठ

११०. कनिष/ कनिये कनिये

१११. बाकस- बाकशे

११२. होष/ होय होष

११३. खडबदा-

उबदा

११४. बूमैवहि (different meaning- got under stand)

११५. बूमएवहि/बूमैवनि/ बूमयवहि (under stand himself)

११६. चनि- चव/ चवि गेव

११७. खधाष- खधाय

११८.

मोन पाडवखिन्ह/ मोन पाडवखिन/ मोन पाववखिन्ह

११९. कैक- कएक- कषएक

१२०.

वग वग

१२१. जबेनाष

१२२. जबेनाष जवउनाष- जवधनाष/

जबेनाष

१२३. होषत

१२४.

गबरेवहि/ गबरेवनि गबरेवहि/ गबरेवनि



१२३.

टिचैत- (t o t e s t) टिचखत

१२७. कबखयो (willing t o d o) करैयो

१२१. जेकवा- जकवा

१२४. तकवा- तेकवा

१२२.

रिदेसब स्थानमे/ रिदेसरे स्थानमे

१३०. कबरँयनहुँ/ कबरँएनहुँ/ कबरँनहुँ कबरँनौ

१३१.

हाकिक (उचावण हाखक)

१३२. ओजन रजन खाकसोच/ खाकसोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. खाधे भाग/ खाध-भागे

१३४. पिचा / पिचाय/पिचाए

१३३. नएण/ ले

१३७. रँचा नएण

(ले) पिचा जाय

१३१. तखन ले (नएण) कठत खडि । कठ/ सुने/ देखे छव झदा कठत-कठत/ सुनेत-सुनेत/ देखेत-देखेत

१३४.

कतेक गोठे/ कताक गोठे

१३६. कमाख-धमाख/ कमाख- धमाख

१४०

वग वग

१४१. खेवाख (f o r p l a y i n g)



१४२.

डुबिह/ डुबिन

१४३.

होषत होष

१४४. का कियो / केउ

१४५.

केश (hair)

१४७.

केस (court -case)

१४१

रैननाष/ रैननाय/ रैननाष

१४४. जलनाष

१४५. कबसी कसी

१४६. चबचा चर्चा

१४७. कर्म कर्म

१४८. डुराँरै/ डुराँरै/ डुराँरै डुराँरै/ डुराँरै

१४९. अखनका/

अखनका

१४९. वष/ विष (राकाक अंतिम शेर)- व२

१५०. कएवक/

केवक

१५१. गवमी गमी

१५१

रवदी रदी



१३५. **सुना गेवाठ सुना/सुना२**

१३६. **एनाङ-गेनाङ**

१३७.

तेना ले घेबवहि/ तेना ले घेबवनि

१३८. **नधि / ले**

१३९.

डरो डरो

१४०. **कतह/ कते कही**

१४१. **उमबिगब-उमेबगब उमबगब**

१४२. **भबिगब**

१४३. **धोन/धोखर धोएत**

१४४. **गप/गप्प**

१४५.

के के

१४६. **दबरज्जा/ दबरजा**

१४७. **गाम**

१४८.

धबि तक

१४९.

घुबि लोष्ट

१५०. **खोबरके**

१५१. **रुह**

१५२. **ते/ तू**

१५३. **तेहि (पद्यमे त्राह)**



११. जौंती / जौंति

११.

कबरौंअ कबरौंअये

१२. अकेठा

१०. कबितथि / कबतथि

११.

पहुँचि/ पहुँच

१२. बाखवन्हि बखवन्हि/ बखवनि

१३.

वगवन्हि/ वगवनि वागवन्हि

१४.

सुनि (उचावण सुअन)

१३. खडि (उचावण खगडि)

१७. अवथि गेवथि

११. रिंतोने/ रिंतोने/

रिंतोने

११. कबरौंअन्हि/ कबरौंअनि/

करेवथिन्ह/ करेवथिन

१२. कबएवन्हि/ करेवनि

१०.

आकि/ कि

११. पहुँचि/

पहुँच

१२. रौंती जबाय/ जबाय जबा (आंगि नगा)



१९३.

से से

१९४.

हाँ ये हाँ (हाँये हाँ रिभक्तिमे ल्हाँ कथ)

१९५. **खेव खेव**

१९७. **खणव(spaci ous) खेव**

१९१. **होयतहि/ होएतहि/ होएतनि/हेतनि/ हेतहि**

१९४. **हाथ मटियाएरै/ हाथ मटियारैय/हाथ मटियाएरै**

१९९. **खेका खेका**

२००. **देखाए देखा**

२०५. **देखारैए**

२०२. **सतवि सतव**

२०३.

साहेरै साहेरै

२०४. **गेलेन्ह/ गेवहि/ गेवनि**

२०३. **हेरौक/ होएरौक**

२०७. **केनो/ कएतहूँ/केनो/ केरूँ**

२०१. **किछ न किछ/**

किछ ने किछ

२०४. **घुमेतहूँ/ घुमएतहूँ/ घुमेनो**

२०९. **एवाक/ अएवाक**

२५०. **अः/ अह**

२५५. **तय/**

वध (अर्थ-पविरतन) २५२. कनीक/ कनेक



२१३. मरुत्क/ सभक

२१४. मिता२/ मिवा

२१५. क२/ क

२१६. जा२/

जा

२१७. खा२/ खा

२१८. भ२ / भ' (' बाल्टिक कमीक छातक)

२१९. निश्रम/ नियम

२२०

लेकटखव/ लेकटखव

२२१. पहिब अश्रव टा/ रौदक/ रौचक ट

२२२. तहि/तहिं/ तखि/ ते

२२३. कहि/ कही

२२४. तँ/

ते / तँ

२२५. नँ/ नँ/ नखि/ नहि/ले

२२६. ते/ लए / एवीहेँ/

२२७. छखि/ छै/ छैक / छग

२२८. दृष्टि/ दृष्टियेँ

२२९. खा (come)/ खा२(conjunct i on)

२३०.

खा (conjunct i on)/ खा२(come)

२३१. कनो/ कोनो, कोना/केना

२३२. गेलोन्ह-गेवहि-गेवनि



२३३. हेरौक- होएरौक

२३४. केनौ- कएनौ-कएतहूँ/केनौ

२३५. किछ न किछ- किछ न किछ

२३६. केहन- केहन

२३७. आर (come)- आर (conjunction-and)/ आर । आर-आर /आरह-आरह

२३८. रथत-ठत

२३९. घुमेतहूँ-घुमएतहूँ- घुमेवाटे

२४०. एवाक- अएनाक

२४१. होनि- होअन/ होहि/

२४२. उ-बाम उ आमक रीच(conjunction), उ कहक (he said)/ उ

२४३. की रथ/ कोसी अथवी रथ/ की ह । की हग

२४४. दृष्टिअ/ दृष्टिये

२४५.

. गोमिब/ सामेव

२४६. ते / तथ/ तथि/ तहि

२४७. जौ

/ जाँ/ जाँ

२४८. सभ/ सर

२४९. सभक/ सरहक

२५०. कहि/ कही

२५१. कनो/ कोनो/ कोनहूँ/

२५२. काबकती भय गेव/ भय गेव/ भय गेव

२५३. कोना/ केना/ कनना/ कना

२५४. अः/ अह



२७.७. **जने/ जनए**

२७.७. **गेवनि/**

गेवाह (अर्थ परिवर्तन)

२७.१. **केवहि/ कएवहि/ केवनि/**

२७.४. **नय/ वध/ वधह (अर्थ परिवर्तन)**

२७.९. **कनीक/ कनेक/कनी-मनी**

२७.०. **पठेवहि पठेवनि/ पठेवधन/ पपठेवहि/ पठेवनि/**

२७.५. **निधम/ नियम**

२७.२. **हेक्टखव/ हेक्टखव**

२७.३. **पहिव अक्षर बहने ट/ रीचमे बहने ट**

२७.४. **आकारान्तमे रिक्ताविक प्रयोग उचित नै/ अपोसुप्रार्थकीक प्रयोग फार्सक तकनीकी नूनताक परिचायक ओकव रैदना अरग्रह (रिक्तावी) क प्रयोग उचित**

२७.३. **केव (पद्यमे त्राह) / -क/ क२/ के**

२७.७. **डैहि- डहि**

२७.१. **वगैध/ नगैये**

२७.४. **होधत/ हधत**

२७.९. **जधत/ जधत/**

२१०. **अधत/ अधत/ आउत**

२१५

. अधत/ अधत/ येत

२१२. **पिअरौक/ पिअरौक/पियेरौक**

२१३. **शुक/ शुकह**

२१४. **शुकहे/ शुकध**

२१३. **अधतह/अउतह/ एतह/ उतह**



२१७. जाहि/ जाग/ जग/ जौ

२११. जागत/ जेतए/ जगतए

२११. खाएव/ खाएव

२१२. कैक/ कएक

२१०. खायन/ खाएन/ खाएव

२११. जाए/ जगए/ जग (नानति जाए नगतीह ।)

२१२. नकएन/ नकाएव

२१३. कर्तृखाएव/ कर्तृखाएन

२१४. ताहि/ तौ/ तग

२१३. गायरौ/ गाएरौ/ गएरौ

२१७. सकै/ सकए/ सकय

२११. सेवा/सवा/ सवाए (भात सवा गेल)

२११. कहेत बगि/देखैत बगि/ कहेत छुनौ/ कहे छुनौ- खाहिना चलेत/ पटेत

(पटे-पटेत अर्थ कखनो काव परिवर्तित) - खाव बुमै/ बुमैत (बुमै/ बुमै छी कदा बुमैत-बुमैत)। सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/ डै। रचलौ/ रचलौक। बखरौ/ बखरौक। रिन/ रिन। बातिक/ बातिक बुमै आ बुमैत केव अपन-अपन जगहगव प्रयोग समीचीन अछि। बुमैत-बुमैत आरि बुमविर्ष। हमरु बुमै छी।

२१२. दुखारे/ दारै

२१०. भेटै/ भेटै/ भेटै

२११.

खन/ खीन/ खना (भोव खन/ भोव खीन)

२१२. तक/ धवि

२१३. ग२/ गौ (meaning different - जनरौ ग२)

२१४. स२/ सँ (कदा द२, न२)



२९३. उर्र (तीन अक्षरक मेव रँदना प्रनकजिक एक था एकठा दोसबक उपयोग) आदिक रँदना व्र आदि । महउर्र/ महव्र/ कर्त्त/ कर्त्त आदिमे उ सहाजक कोनो आरथकता मैथिलीमे नै थडि । **रङ्गर**

२९७. रँगी/ रँगी

२९१. रँना/रँना **रँना**/ रँना (बँरँना)

२९४

रँनी/ (रँदनेरँनी)

२९९. रँनी/ रँनी

३००. अर्रबिद्विथ/ अर्रबिद्विथ

३०९. लेमथ/ लेमथ

३०२. वमडुबका नमडुबका

३०२. वगै/ वगै (

भेठैत/ भेठै)

३०३. वगव/ वगव

३०४. ठरौ/ ठरौ

३०३. वर्रवक/ वर्रवक

३०७. था (come)/ था (and)

३०१. पश्चाताप/ पश्चाताप

३०४. २ केव रँरहाव शिद्धक अर्रुमे माव, यथासंभर रँचमे नै ।

३०९. कठैत/ कठै

३९०.

वमथ (डव)/ वँठ (डवै) (meaning different)

३९९. तागति/ ताकति

३९२. खवाप/ खवारँ

३९३. रँगन/ रँगन/ रँगन



३५४. जाठि/ जाथठ

३५५. कागज/ कागच/ कागत

३५६. गिले (meaning different - swallow)/ गिले (शसए)

३५७. वास्तिव्य/ वास्तिव्य

DATE-LIST (year – 2013-14)

(१४२९ क्रमवी साव)

Marriage Days:

Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

March 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

Upanayana Days:

February 2014- 2, 4, 9, 10.

March 2014- 3, 5, 11, 12.

April 2014- 4, 9, 10.

June 2014- 2, 8, 9.



Dviragaman Din:

November 2013– 18, 21, 22.

December 2013– 4, 6, 8, 9, 12, 13.

February 2014– 16, 17, 19, 20.

March 2014– 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014– 16, 17, 18, 20.

May 2014– 1, 2, 9, 11, 12.

Mundan Din:

November 2013– 20, 22.

December 2013– 9, 12, 13.

January 2014– 16, 17.

February 2014– 6, 10, 19, 20.

March 2014– 5, 12.

April 2014– 16.

May 2014– 12, 30.

June 2014– 2, 9, 30.

FESTIVALS OF MTHILA (2013–14)

Mauna Panchami –27 July

Madhushravani – 9 August

Nag Panchami – 11 August



Raksha Bandhan- 21 Aug

Kri shnast ami - 28 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 5 Sept ember

Hart al i ka Teej - 8 Sept ember

Chaut hChandr a-8 Sept ember

Vi shwak ar ma Pooj a- 17 Sept ember

Anant Cat ur dashi - 18 Sep

Pi t ri Paksha begi ns- 20 Sep

Ji moot avahan Vrat a/ Ji ti a-27 Sep

Mat ri Navami -28 Sep

Kal ashst hapan- 5 Oct ober

Bel naut i - 10 Oct ober

Pat ri ka Pr avesh- 11 Oct ober

Mahast ami - 12 Oct ober

Maha Navami - 13 Oct ober

Vi j ya Dashami - 14 Oct ober

Koj agar a- 18 Oct

Dhant er as- 1 November

Di yabat i , shyama pooj a-3 November

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-4 November

Bhr at ri dwi ti ya/ Chi t r agupt a Pooj a- 5 November



Chhat hi -8 November

Sama Pooj aar ambh- 9 November

Devot t han Ekadashi - 13 November

r avi vr at ar ambh- 17 November

Navanna par van- 20 November

Kart i kPoor ni ma- Sama Vi sar j an- 2 December

Vi vaha Panch mi - 7 December

Makar a/ Teel a Sankr ant i -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 29 January

Basant Panch ami / Sar aswat i Pooj a- 4 Febr uary

Achl a Sapt mi - 6 Febr uary

Mahashi var at ri -27 Febr uary

Hol i kadahan-Fagua-16 Mar ch

Hol i - 17 Mar ch

Sapt ador a- 17 Mar ch

Var uni Tr ayodashi -28 Mar ch

Jur i shi t al -15 Apr il

Ram Navami - 8 Apr il

Akshaya Tritiya-2 May

Janaki Navami - 8 May

Ravi Br at Ant - 11 May



Vat Savitri -barasait - 28 May

Ganga Dashhar a-8 June

Hari vasar Vr at a- 9 July

Shree Guru Poor ni ma-12 Jul

VI DEHA ARCHIVE

पत्रिकाक सबटा पुरान अंक ब्रैल-बिदेह अ. तिवहता आ देरनागरी रूपमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह अंक ३.०पत्रिकाक पहिल -

बिदेह अंक ३.०पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/>

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maitthili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pot-hi>

३.डिओ संकलन आ मैथिली. Maitthili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४.मैथिली वीडियो संकलन Maitthili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-videos>

५. आधुनिक चित्रकला आ चित्र /मिथिला चित्रकला.Mthila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>



-बिदेह-क एहि सब सहयोगी विक्रपब सेहो एक रेव जाड ।

३.बिदेह मैथिली क्लिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१.बिदेह मैथिली जानरुत एग्रीगेष्टव :

<http://videha-aggregate.blogspot.com/>

४.बिदेह मैथिली साहित्य अंशेजरीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६.बिदेहक पूरि-कप "भारतसबिक गाड" :

<http://gajendratihakur.blogspot.com/>

१०.बिदेह अडेकल :

<http://videha123.blogspot.com/>

११.बिदेह फागत :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिन तिवहुता (मिथिलासकब) जानरुत (रंग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिन रेव बिदेह द्वावा

<http://videha-brain.blogspot.com/>

१४. VIDEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archives.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पारिष्किक ङ पत्रिका मैथिली पोथीक आकर्षण

<http://videha-pothi.blogspot.com/>



१७. बिदेह प्रथम मेथिली पाष्किक ङा पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१८. बिदेह प्रथम मेथिली पाष्किक ङा पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१९. बिदेह प्रथम मेथिली पाष्किक ङा पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

२०. मेथिल आब मिथिला (मेथिलीक सबसँ लोकप्रिय जानबूत)

<http://maithilaurmitihila.blogspot.com/>

२०श्रुति प्रकाशन.

<http://www.shrutipublication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३. गजेन्द्र ठाकुर अडेकर

<http://gajendrat hakur123.blogspot.com>


२४. मेना कुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२५. बिदेह रेडियोकरिता आदिक पहिल पोडकास्ट सांघठ-मेथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  [Videha Radio](http://VidehaRadio)

२८.  [Join official Videha facebook group.](http://JoinofficialVidehafacebookgroup)



२५. बिदेह मैथिली नाँठ उअेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२६.समदिया

<http://esamad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिन्स

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१.अनचिन्हार आखर

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाङकु

<http://maithili-haike.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. बिहनि कथा

<http://vihanikatha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिआ

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३७. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३१.मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>



महत्त्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>
<http://videha123.wordpress.com/>
<http://videha123.wordpress.com/about/>



विदेह:सदेह:९: २: ३: ४:३:७:१:५:१० "विदेह"क श्रिष्ट संस्करण: विदेह-अ-पत्रिका (<http://www.videha.co.in/>) क चूनन वचना सम्मिलित ।

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।



Details for purchase available at publisher's (print - version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to shruti.publication@shruti-publication.com

बिदेह



मैथिली साहित्य खान्दान

(c)२००४-१३. सराधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि छटि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ-पत्रिका । SSN 2229-547X
VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडव । सहायक संपादक: शिर कमार सा आ कुमारी (मंजु कमार कर्ण) । भाषा-संपादन: नागेन्द्र कमार सा आ पद्मिका बिद्यानन्द सा । कथा-संपादन: ज्ञाति सा चौधरी आ बणि बेथा सिन्हा । संपादक-शोध-अनुसंधान: डा. जया रमा आ डा. बाजीर कमार रमा । संपादक- नाटक-वर्गमंच-चवटि- रेंचन ठाकुर । संपादक- सूचना-संपर्क-समाद- पुनम मंडव आ प्रियंका सा । संपादक- अनुवाद विभाग- रिनित उषेव ।

बचनाकार अपन मौरिक आ अप्रकाशित बचना (जकर मौरिकतक संपूर्ण उतबदायित्व लेखक गणक मध्य छटि) ggajendra@videha.com केँ मेर अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf रा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकार अपन सम्पत्ति पबिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठैताह, से आशी करैत छी । बचनाक अंतमें ठागप बहय, जे ङ बचना मौरिक छटि, आ पहिल प्रकाशिक हेतु बिदेह (पाष्किक) ङ पत्रिकारकेँ देल जा बहन छटि । मेर प्राप्त होयबक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतब) एकर प्रकाशिक अंकक सूचना देल जायत ।

बिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका छटि आ एमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें मिथिला आ मैथिलीसँ संपर्कित बचना प्रकाशित कएल जायत छटि । एहि ङ पत्रिकारकेँ शीमति नक्का ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिकेँ ङ प्रकाशित कएल जायत छटि ।

(c) 2004-13 सराधिकार स्वसिक्त । बिदेहमें प्रकाशित सभलै बचना आ आर्कागरक सराधिकार बचनाकार आ संग्रहकर्ताक नगमें छटि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशिक किंरा आर्कागरक उपयोगक अधिकार किनबक हेतु ggajendra@videha.com पब



संपर्क करू । एहि सागठकेँ प्रीति न्ना ठारूब, मधुनिका चौधरी आ बन्नि प्रिया द्वारा
डिजाइन कएल गेल ।



सिंहिबद्ध

